भूमिका।

यदि किसी व्यक्ति की सम्पूर्ण जीवन-कथा लिखी जाये तो वह सैकड़ों हजारों पृष्ठों में समाप्त होगी। ये सब व्यास रूप से प्रगट होने वाली बातें समास रूप से मनुष्य के करतल में अङ्कित रहती हैं। सामुद्रिक शास्त्र अदृष्ट देवता की भांति अपनी मौन-भाषा में, वाणी की गम्भीरता में इन्हें व्यक्त करता है। उसकी इस वाणी को समझ सकने की इच्छा मानव मात्र में पाई जाती हैं।

आचार्यों ने इस शास्त्र के असीम विस्तार को अपनी अनुभूति के साथ निर्दिष्ट करने का प्रयत्न किया है। घटना और शास्त्र के सामञ्जस्यसे कतिपय सिद्धांत निर्धारित किये गये हैं। जैन शास्त्रोंमें भी यह विषय पाया जाता है। पाश्चात्य देशों में इसका यथेष्ट अध्ययन और परिशीलन होने लगा है।

प्रस्तुत पुस्तक के संग्रहकार श्रीयुत मङ्गलप्रसादजी विश्वकर्मा, विशारद ने इस विषय के ग्रन्थों का अध्ययन करके इसका संग्रह केवल इसी दृष्टि से किया है कि, हिन्दी भाषा भाषियों की रुचि इस ओर हो और वे भी इस विषय के प्रेमी ही नहीं किन्तु, अपने अध्ययन और अनुभूति से कोई प्रमाणिक ग्रन्थ लिख कर भाषा के मस्तक को गौरवान्वित करें। साथ ही देहातों में जो अपढ़-मूर्ख जोसी आदि झूठा हाथ देखकर ठगते फिरते हैं—उनसे समाज सचेत हो।

जैन-साहित्य-मन्दिर सागर ने इसका प्रकाशन करके, एक अव्यक्त सज्जन ने-जो अपना नाम प्रकट नहीं करना चाहते-परवार-बन्धु के ग्राहकों को भेंट स्वरूप दी है। अतएव हम उक्त सज्जनों के हृदय से आभारी हैं।

परवार-बन्धु, कार्यालय
जबलपुर, श्रुतपंचमी १९८४

निवेदक—
छोटेलाल जैन।

विषय--सूची

क्रमाङ्क	शीर्षक	पृष्ठाङ्क
(१)	सामुद्रिक-शास्त्र [प्रकोष्ट रेखा, आयुरेखा, पितृरेखा, मातृरेखा, उर्ध्वरेखा]	१
(२)	ग्रहों का स्वरूप	१६
(३)	तिलाङ्क	३८
(४)	पद्माङ्क	५६
(५)	कपाल-दर्शन	६१

प्रथम पर्व
द्वितीय पर्व
तृतीय पर्व

१. ... मुद्रिका
३. सूर्य-रेखा
५. भाग्य-रेखा
६. आयुष्य-रेखा
७. स्वास्थ्य-रेखा
९. मीन
१०. यव

श्रीपरमात्मने नमः

भाग्य-परीक्षा

सामुद्रिकशास्त्र ।

मानव जाति के करतल में शंख, चक्र, यव, पद्मादि जो चिन्ह दिखाई पड़ते हैं उन्हें 'कराङ्क' कहते हैं और विभिन्न आकार की जो रेखाएँ दिखाई पड़ती हैं उनको 'कर-रेखा' कहते हैं। जिस प्रकार पदाङ्क और ललाट-रेखा दोनों के सामञ्जस्य से मानव के जीवन का शुभाशुभ निश्चित किया जाता है उसी प्रकार केवल करतल को देखने से ही मनुष्य के जीवन की समस्त घटनावली का एक चित्र बन जाता है। इसी करतल को देखकर प्राचीन काल के पुण्यात्मा आर्य-ज्योतिर्विद् मुनि ऋषिगण मनुष्यमात्र का भूत, भविष्यत् और वर्तमान तीनों कालों का फलाफल कहा करते थे। अब भी पाश्चात्य देशों के ज्योतिषी हाथ देखकर प्रत्यक्ष फल

दिखाकर सर्व साधारण में प्रतिष्ठित होते हैं । किसी सुप्रसिद्ध पाश्चात्य पण्डित ने तो स्पष्ट शब्दों में कहा है:—
" हम लोग बलवती कामना लेकर घोर अन्धकार में भटक कर सदा यश और भाग्य के अन्वेषण में श्रान्त हुआ करते हैं; फिर भी करतल-स्थित दीपक की कोई सहायता नहीं लिया करता । इसकी अपेक्षा आश्चर्य का और कौन विषय हो सकता है ? " सरलता से संक्षेप में जिज्ञासुगण इन प्रयोजनीय करतल रेखाओंका स्थूल मम ग्रहण करने में समर्थ हो सकें इस दृष्टि से उसका कुछ परिचय यहां प्रस्तुत किया जाता है।

हाथ की रेखाएँ दो प्रकार की होती हैं—अङ्क के समान और रेखाओं के समान । शंख, चक्र, गदा आदि के विज्ञान को 'अङ्क-कोष्ठी' और उसके अन्तर्गत रेखादि विचार के विज्ञान को 'रेखा-कोष्ठी' कहते हैं । यहाँ पहले पहल अङ्क-कोष्ठी के सम्बन्ध में लिखा जाता है ।

जिन जिन ग्रहों से जिन जिन विषयों की घटनाएँ स्थिर की जाती हैं, वह संक्षेप में ये हैं:— शुक्र ग्रह से विवाह और प्रेम, बृहस्पति से मान-सम्भ्रम, शनि से दुःख, क्लेशादि, बुध से विद्या-बुद्धि, चन्द्र से आन्तरिक पीड़ा, दुःख आदि और मंगल ग्रह से सामर्थ्य, पराक्रम, अस्त्राग्निभय आदि ।

करतल के योग के स्थान पर मछली के आकार का चिन्ह परिदृष्ट होने से मनुष्य धनी और धार्मिक होता है । इसी प्रकार मछली की पूंछ के आकार से मनुष्य विद्वान्; चक्र से धनवान्; शंख, छत्र, हाथी, कमल से राजा और उसीके आकार से मिलता हुआ होने से सौभाग्यमान; कलश, अंकुश, मृणाल

तथा पताका से निधिपति, सूत्र, धेनु तथा दन्त-चिन्ह से भू-स्वामी और वेदी, तडाग, देव-नदी या त्रिकोण चिन्हों से मानव याज्ञिक और धार्मिक होता है।

जिसके करतल में शंख, चक्र, ध्वजा आदि चिन्ह दिखाई पड़ते हैं वह व्यक्ति सर्वशास्त्रपारदर्शी और विशिष्ट ज्ञानी होकर सहज ही प्रतिष्ठा प्राप्त करता है।

जिसके करतल में प्रस्फुट और उज्वल मीन चिन्ह होता है वह व्यक्ति धनवान्, पुत्रवान् और सुखी होता है। ऐसे व्यक्ति जिस कार्य में हाथ डालते हैं उसी में सिद्धि प्राप्त करते हैं।

जिसके करतल में तराजू, ग्राम, चतुष्कोण अथवा वज्र चिन्ह अंकित रहता है वह व्यक्ति अपने जीवन में जो व्यापार करता है वही उसके सौभाग्य का प्रदर्शक होता है।

जिस व्यक्ति के करतल में त्रिशूल होता है वह व्यक्ति दाता, धार्मिक और सौभाग्यमान् होता है। खड्ग, धनुष और तोमर आदिक चिन्ह रहने से मनुष्य वीर और भाग्यवान् होता है। अष्टकोण होने से मनुष्य भूमि का स्वामी होता हैं।

जिसके हाथ में पर्वत, कङ्कण, योगी, नरमुंड अथवा घट के समान कोई चिन्ह रहता है वह व्यक्ति राज-मंत्री होता है।

जिसके हाथ में अंकुश, छत्र और कुंडल ये तीन चिन्ह रहते हैं वह पुरुष चक्रवर्ती होता है, जिसके हाथ में इन में से दो चिन्ह रहते हैं वह सौभाग्यवान् और जिसके हाथ में

एक चिन्ह रहता है वह परतंत्र होता है।

मछली की पूंछ दिखाई पड़ने से मनुष्य विद्वान् और धनवान् होता है। ऐसे व्यक्तियों को पैतृक सम्पत्ति का कुछ अंश प्राप्त होता है।

हाथ में यव चिन्ह से विद्या, मत्स्य और चक्र चिन्ह रहने से धन-लाभ होता है।

जिसके करतल में एक मुद्रा चिन्ह रहता है वह व्यक्ति राजा, दो हों तो धनवान् और जिसके हाथ में तीन मुद्रा चिन्ह हों तो वह रोगी और जिसके हाथ में इससे अधिक हैं वह संतानवान् होता है।

पाश्चात्य विद्वानों के मत से भी मत्स्य अथवा मत्स्य पुच्छ रहने से मानव सैकड़ापति, वज्र चिन्ह रहने से हज़ारपति और पद्म चिन्ह रहने से लक्षाधिपति और शंख चिन्ह रहने से करोड़पति होता है।

जिसके अँगूठे के मूल भाग में वज्र चिन्ह रहता है वह व्यक्ति विभिन्न प्रकार के सुख प्राप्त करता है।

अँगूठे के बीच में यव चिन्ह रहने से पुरुष सर्वविद्या-पारदर्शी, अतुल ऐश्वर्य सम्पन्न, बहु भोगी और महा सुखी होता है। अँगूठे के ऊर्द्ध्व भाग में यव चिन्ह रहने से पुरुष भोगी और सुखी होता है, तर्जनी व मध्यमाङ्गुली के मध्य में यव रहने से पुरुष धनी, सुखवान् और स्त्री-पुत्र-गृहादि से युक्त होता है।

सभी अँगुलियों में चक्र चिन्ह रहने से पुरुष महाबल-

सम्पन्न और अनेक गुण विशिष्ट होता है।

जिसकी कनिष्ठा अँगुली में चक्र चिन्ह रहता है वह व्यक्ति व्यापार में बहुत धन कमाता है। जिसकी कनिष्ठा अँगुली में चक्र नहीं रहता उस व्यक्ति को व्यापार में हानि उठानी पड़ती है।

जिसकी अनामिका में चक्र रहता है वह विविध उपायों से और मित्र के द्वारा अर्थ उपार्जन करता है। अनामिका में चक्र चिन्ह न रहने से कई प्रकार से धन-नाश होता है।

जिसकी मध्यमा अँगुली में चक्र चिन्ह रहता है वह ईश्वर की कृपा से विभवशाली होगा और चक्र न रहने से उस पर अनेक दैवी विपत्तियाँ पड़ने से उसका धन नाश होगा। जिसके अँगूठे में चक्र रहता है वह अपने पूर्वजों की सम्पत्ति का अधिकारी होता है और चक्र न रहने से पूर्वजों का धन नष्ट कर देता है।

मध्यमा अँगुली अथवा अँगूठे में यव रहने से मनुष्य दूसरों का संचित द्रव्य प्राप्त करता है।

वृद्धांगुली में वज्र, करतल में तोरण एवं मध्यमातल में श्वेत पद्म रहने से मनुष्य अखण्ड विभवशाली और विपुल कीर्तिमान् होता है।

स्त्री-जाति के करतल में अश्व, गज, विल्व-तरु, युग, वाण, यव, तोमर, ध्वजा, चमर, माला, छोटा पर्वत, कर्णभूषण वेदिका, शंख, छत्र, कमल, मीन, चतुष्पद, सर्प-फण, अट्टालिका, रथ, अंकुश आदिक चिन्हों में यदि कोई एक चिन्ह होता है

तो वह स्त्री राजरानी अथवा सौभाग्यशालिनी होती है।

जिस स्त्री के हाथ में असि, त्रिशूल, शक्ति, गदा अथवा दुन्दुभि का चिन्ह रहता है वह स्त्री संसार में अत्यन्त यशस्विनी होती है।

जिस स्त्री के हाथ में अंकुश, कुंडल अथवा चक्र रहता है वह पति को सुख देनेवाली और सुन्दर पुत्र को जन्म देने वाली होती है। धनुष और चँवर चिन्हों के होने से भी स्त्री सुलक्षणा होती है।

जिस स्त्री के करतल में शकट [गाड़ी के आकार का] चिन्ह होता है वह कृषिजीविनी होती है।

जिस कामिनी के हाथ में दक्षिणावर्त मण्डल होता है वह स्वयं सिंहासनाधिकारिणी होती है। यदि शंख, छत्र, पद्म रहता है तो उससे उत्पन्न पुत्र राजा होता है। स्त्री के हाथ में पुष्प-दल-सा चिन्ह रहने से कुल-दीपक पुत्र उत्पन्न होता है।

स्त्री के हाथ में मत्स्य रहना उसके सौभाग्यवती होने का एक शुभ चिन्ह है। यदि प्राचीर चिन्ह होता है तो वह दासी के घर में जन्म लेने पर भी राज-पत्नी होती है।

जिस कामिनी के दक्षिण करतल में तुला, एवं वाम करतल में हाथी या वृष चिन्ह अंकित रहता है उसका पति व्यापारी होता है।

स्त्री के हाथ में पूर्ण कुम्भ चिन्ह उसके पौत्रवती होने का द्योतक है।

जिस स्त्री के करतल में कंक, शृगाल व्याघ्र, वृश्चिक, सर्प, गर्दभव बिल्ली जैसा चिन्ह अथवा वामावर्त मण्डल दिखाई पड़ता है वह स्त्री बड़ी अभागिनी होती है।

सामुद्रिक शास्त्रियों ने मानव के करतल भाग को तीन प्रधान भागों में विभक्त किया है:-अँगुलि-भाग, तल-भाग और प्रकोष्ठ भाग। अँगुलि-भाग में अँगूठे में शुक्र ग्रह, तर्जनी में वृहस्पति, मध्यमा में शनि, अनामिका में सूर्य और कनिष्ठा में बुध ग्रह अधिष्ठित रहता है। तल-भाग और मध्य-स्थान में मङ्गल और उसके नीचे चन्द्र स्थित रहता है। अँगूठे के दो भाग और शेष प्रत्येक अँगुलिओं के तीन भाग रहते हैं। तर्जनी के मस्तक मे मेष, मध्य में वृष, नीचे मिथुन; अनामिका के मस्तक में कर्कट, मध्य में सिंह, नीचे कन्या; कनिष्ठा के मस्तक पर तुला, मध्य में वृश्चिक और नीचे धन और मध्यमा के मस्तक पर मकर, मध्य में कुम्भ और नीचे मीन-इस प्रकार मानवमात्र के हाथ में बारह राशियों का स्थान रहता है। अँगूठे की कोई राशि नहीं रहती। प्रत्येक अँगुली के पाद-देश को उसी अँगुली के अधिष्ठाता ग्रह का शिखा-स्थान कहते हैं। मंगल और चन्द्र का कोई शिखा-स्थान नहीं होता। उनके अधिष्ठित स्थान को उनका क्षेत्र कहते हैं। जिस विषय का शुभाशुभ निर्णय करना हो उस विषय के अधिष्ठाता ग्रह के शिखा अथवा क्षेत्र देखने से अदृष्ट फल अवगत हो जाता है। इसी प्रकार ग्रहों के अधिष्ठित स्थान को देखकर और रेखाओं की प्रकृति का निरीक्षण करने से मनुष्य के जीवन की घटनाएँ निरूपित होती हैं।

हाथ में चार रेखाएँ प्रधान होती हैं:—आयुरेखा, मातृरेखा, पितृरेखा और ऊर्ध्वरेखा। कनिष्ठा अँगुली के मूल-भाग में बुध ग्रह के शिखा स्थान के नीचे से तर्जनी के मूल-भाग में बृहस्पति के शिखा स्थान के ऊर्ध्व भाग तक जो रेखा विस्तृत है उसे आयुरेखा कहते हैं। अंगुष्ठ और तर्जनी के अन्तर्वर्ती स्थान बृहस्पति की शिखा के नीचे से हाथ के मध्यभाग से चन्द्र के क्षेत्र के ऊर्ध्व भाग पर्यन्त जो रेखा दिखाई पड़ती है उसे मातृरेखा कहते हैं। मातृरेखा के मूल भाग से उत्पन्न होकर शुक्र के शिखा स्थान और चन्द्र के क्षेत्र में से होकर जो घुमावदार रेखा मणिबन्ध स्थल तक गई है उसे पितृरेखा कहते हैं। और प्रकोष्ठ भाग (मणिबन्ध) से निकल कर जो रेखा पितृ-मातृरेखा को स्पर्श करती हुई ऊर्ध्व होकर मध्यमा अँगुली के मूल भाग में शनि के शिखा स्थान को गई है उसे ऊर्ध्व रेखा कहते हैं।

इनके अतिरिक्त प्रकोष्ठ, रति-पताका, विवाह, ज्ञान, सन्तान, सम्पत्ति, काल, कीर्ति, मैत्री आदि को प्रदर्शित करने वाली स्फुट, अस्फुट, सूक्ष्म एवं बहुसंख्यक शाखा और प्रशाखाएँ हाथ में दृष्टिगत होती हैं।

प्रकोष्ठ रेखा :

यदि प्रकोष्ठ में चारों रेखाएँ उज्ज्वल और समान रहती हैं तो मनुष्य सत् प्रकृति, स्वास्थ्यवान् तथा सौ वर्ष

तक जीवित रहता है। यदि ऊपर के भाग में दो छोटी छोटी रेखाएँ बनने से एक कोणसा दिखाई पड़े तो समझना चाहिए कि उक्त व्यक्ति किसी मृत व्यक्ति की बहुत सम्पत्ति का उत्तराधिकारी होकर, शेष अवस्था में यथा सम्भव समाज में मान और प्रतिष्ठा प्राप्त करेगा।

यदि प्रकोष्ठ में तीन समान और विस्तीर्ण रेखाएँ हों तो व्यक्ति ६० वर्ष की आयु तक जीवित रहेगा। मध्यायु में विपुल धन-सम्पन्न और बुढ़ापे में दरिद्र होगा। यदि प्रथम रेखा स्थूल, द्वितीय रेखा सूक्ष्म और तृतीय रेखा छोटी हो तो मनुष्य प्रथमतः धनशाली, दूसरी अवस्था में दरिद्र और तीसरी अवस्था अथवा बुढ़ापे में पुनः सम्पत्तिशाली होगा।

यदि प्रकोष्ठ में केवल दो रेखाएँ हों तो उक्त व्यक्ति पचास वर्ष पर्यन्त जीवित रहेगा और सदा पीड़ित और रोगी बना रहेगा।

जिसके प्रकोष्ठ में रेखाएँ परस्पर कटी अथवा मिली हुई दिखती हैं उसकी मृत्यु बहुत दूर रहती है।

यदि रेखाएँ प्रकोष्ठ के ऊपरी भाग में हों, चारों ओर फैली हुई और टेढ़ी-मेढ़ी होकर कई दिशाओं में गई हों तो समझना चाहिए कि वह व्यक्ति अस्थिर संकल्प, अद्भुत, विकल्प-प्रकृति, अत्युच्च, भावुक और अत्यन्त उच्चाभिलाषी है।

यदि रेखाएँ श्रृंखला के समान हों, विशेष कर प्रथम रेखा इस प्रकार दिखाई पड़े तो जानना चाहिए कि यह व्यक्ति वाणिज्य-व्यवसाय करके महान् धनशाली होगा।

यदि प्रकोष्ठ से दो रेखाएँ निकली हों और चन्द्र के क्षेत्र के समीप त्रिकोणाकार हो गई हों तो वह पुरुष अत्यन्त लम्पट और स्त्री हो तो अत्यन्त विलासिनी अथवा वेश्या होती है।

आयु-रेखा ।

सात ग्रहों में से चार ग्रहों का शिखर स्थान केवल एक यही आयु रेखा ग्रहण किये रहती है। यह रेखा सब रेखाओं में प्रधान है। हस्तरेखा का प्रायः आधा विचार इसी रेखा से किया जाता है। आयु रेखा में मुद्रा अथवा नक्षत्र के समान चिन्दु चिन्ह हों और वह जिस ग्रह की सीमा हो तो मनुष्य उस ग्रह के समय दुर्भाग्य पीड़ित होगा। यदि बृहस्पति की सीमा अथवा शिखा स्थान में हो तो धन और मान; शनि में हो तो स्वास्थ्य और सुख; सूर्य में हो तो विद्या और बुद्धिविषयक दुर्भाग्य घटित होगा। यदि विन्दु के स्थान में नक्षत्र का चिन्ह हो तो उक्त ग्रहों के फल के समान विपरीत फल होगा।

जिसकी आयुरेखा उज्ज्वल और विस्तृत होती है वह व्यक्ति तेजस्वी, प्रफुल्ल और सदाशय होता है।

जिसकी आयुरेखा से तर्जनी की ओर एक शाखा और मध्यमा की ओर उसकी दूसरी शाखारेखा अस्थूलाग्र हो तो जानना चाहिए कि वह व्यक्ति अपने अध्यवसाय

और परिश्रम के बल से संसार में महा सौभाग्य-सम्पन्न होगा।

यदि वृहस्पति के शिखा-स्थान पर आयुरेखा सूक्ष्म भाव धारण करे अथवा इस स्थान पर विन्दु के समान कोई चिन्ह दिखाई पड़े तो मनुष्य जिन्दगी भर दरिद्र रहेगा इसमें सन्देह नहीं।

आयु रेखा का यदि कोई भाग दो या तीन भाग में विभक्त हो तो मनुष्य भाग्यवान्, प्रफुल्ल-प्रकृति, साहसिक उच्चमति, विनयी और मित्रों का कार्य-साधक होता है।

यदि वृहस्पति के शिखास्थान पर आयुरेखा विदीर्ण हो और मूलभाग में चन्द्र के क्षेत्र में कई शाखाओं में विभक्त हो तो वह व्यक्ति शान्तिशून्य और सन्दिग्ध चित्त होता है। इस प्रकार के आदमी सरल और सत्प्रकृति होने पर भी वञ्चना और बल प्रयोग से धनी होते हैं।

यदि आयुरेखा द्विभिगत हो तो मनुष्य किसी चौपाये प्राणी से मरण को प्राप्त होना, चाहे जो हो उसकी अपमृत्यु होगी अथवा किसी विषैले प्राणी के द्वारा वह काटा जायगा।

यदि आयुरेखा में दो नक्षत्र चिन्ह एक ही स्थान पर हों तो व्यक्ति चाहे जो कार्य करे समाज में प्रतिष्ठा प्राप्त करेगा।

यदि आयु रेखा केवल विन्दुओं की बनी दिखाई पड़े तो मनुष्य बड़ा कपटी और स्त्री बड़ी व्यभिचारिणी होगी।

पितृ--रेखा

पितृरेखा यदि परिष्कृत, रक्तवर्ण, सरल और मणिबन्ध तक रहती है तो मनुष्य शान्तिपूर्ण एवं दीर्घ जीवन भोग करता है। यदि नक्षत्र के आकार का कोई चिन्ह उसमें दिखाई पड़ता है तो जिस ग्रह में उसकी स्थिति होगी उस ग्रह के समय मनुष्य दुर्भाग्य पीड़ित होगा।

यदि पितृरेखा युग्म हो तो मनुष्य निसन्देह दीर्घजीवी और भाग्यवान् होगा। इस प्रकार के मनुष्य राजा अथवा राजा के समान महा आदरणीय पुरुषों के मित्र, प्रियपात्र तथा अनुग्रहभाजन होते हैं। इस प्रकार की युग्म पितृ रेखा स्त्री जाति के हाथ में होने से स्त्री स्वामि-सुहागिनी और सौभाग्यशालिनी होती है।

जिसकी पितृरेखा विवर्ण होती है उसकी क्रुद्ध प्रकृति उसके मरण का कारण होती है। शुक्र और बृहस्पति के मध्य स्थान में जहां पितृरेखा मिलती है, उस स्थान में यदि शाखा-प्रशाखा हों तो मनुष्य महामान्य और धन सम्पन्न होता है। यदि इस स्थान पर नक्षत्र अथवा मुद्रा का चिन्ह हो तो मनुष्य अपने जीवनकाल में विशेष कर बुढ़ापे में बहुत रोगी होता है। यदि शाखा-प्रशाखा कहीं कटी हुई हों तो उसे दुर्भाग्य की सूचिका समझना चाहिये।

पितृरेखा में यदि नक्षत्र चिन्ह हो तो मनुष्य स्त्री-जाति-प्रेमी और उन्हीं के कारण उसकी मृत्यु की सम्भावना होती है।

पितृरेखा में परस्पर तीन नक्षत्र चिन्ह होने से मनुष्य स्त्री से अपमान, निन्दा और यन्त्रणा भोग करता है और लोक समाज में अत्यन्त घृणा और उपहासास्पद समझा जाता है।

जिसकी पितृरेखा का निम्न प्रान्त मणिबन्ध के समीप विदीर्ण होता है वह व्यक्ति उदास प्रकृति का होता है।

जिस स्त्री की पितृरेखा के ऊपरी भाग में दो क्रास (×) चिन्ह रहते हैं वह नारी उद्दण्ड, निर्लज्जा और व्यभिचारिणी होती है।

जिसकी पितृरेखा मध्यमास्थान में विच्छिन्न होती है वह सांघातिक रोग से पीड़ित होता है और बढापे में रोग से जीर्ण होकर प्राण परित्याग करता है।

पितृरेखा के निम्नप्रान्त में मणिबन्ध के निकट यदि त्रिकोण का चिन्ह दिखाई पड़े तो वह व्यक्ति वाचाल और मिथ्याभाषी होगा।

पितृरेखा औरआयु रेखा के मध्यवर्ती स्थान के ऊपरी भाग यदि वज्र का चिन्ह हो तो वह व्यक्ति उदार चरित्र, सदाशय, वदान्य एवं ज्ञानी होता है। ऐसे व्यक्ति राज-सभा तथा सम्भ्रान्त समाज में बड़ी सहायता से लब्ध प्रतिष्ठ हो जाते हैं।

पितृ—रेखा।

मातृरेखा में क्रास (×) का चिन्ह दृष्टिगत होने से मनुष्य धन-भाग्य-सम्पन्न एवं चाटुतापूर्ण अनभिज्ञ-वाद और मिथ्या कथन में सदा तल्लीन रहता है। मातृरेखा और आयुरेखा के बीच में जितनी उपरेखाएँ होती हैं मनुष्य अपनी प्रथम अवस्था में उतनी ही बार रोगी होता है। पर, ये रोग सांघातिक नहीं होते। जितनी वृहत् रेखाएँ मध्यमा अँगुली के पास रहती हैं, मध्य वयस में मनुष्य उतनी ही बार बीमार पड़ता है यदि कोई रेखाएँ तर्जनी पर्यन्त दृष्टि गत होती हैं तो मनुष्य वृद्धावस्था में उतनी ही बार रोगाक्रान्त होता है। इस अवस्था में पहले मृत्यु की सम्भावना होती है। यदि इन सब छोटी छोटी रेखाओं के बीच में किसी रेखा में अर्द्ध क्रास अंकित हो अथवा वह शाखा-प्रशाखा में विभाजित हो और कोई शाखा-रेखा आयुरेखा से निकलकर तर्जनी की ओर जाती हो तो मनुष्य अपने उपार्जित धन से धनी और अपनी विद्या से कीर्तिशाली होता है।

यदि आयुरेखा के साथ पितृरेखा एकही मिल गई हो, मातृरेखा दिखाई न पड़े तो मनुष्य नृशंस, असम साहसिक और पशु-प्रकृति होता है। तीस वर्ष की आयु तक इस प्रकार के व्यक्तियों को जीवन-सङ्कट होता है। पिता, माता तथा स्त्री से भयंकर कलह होता है और बहुत ही थोड़े समय में इनकी आशा और विश्वास नष्ट हो जाता है। यदि मातृरेखा के परिवर्त में नक्षत्र की आकृति का कोई चिन्ह चिन्ह दिखाई

पड़े तो ऐसा व्यक्ति आत्म-हत्या कर लेता है। यदि ऐसा न हो तो उसे राज-दण्ड में फाँसी मिलती है।

यदि मातृरेखा वक्र भाव से आकर आयुरेखा के साथ मिल जाय तो वह व्यक्ति अनायास भयङ्कर क्षति प्राप्त होगा।

यदि मातृरेखा बड़ी और विस्तार विशिष्ट हो तो मनुष्य दीर्घजीवी होगा और अंतिम काल दुर्गति को प्राप्त होगा।

यदि मातृरेखा युग्म हो तो मनुष्य मध्यायु में निस्सन्देह विपुल सम्पत्ति का अधिकारी होगा। यदि मलिन वर्ण हो तो उक्त व्यक्ति सभी प्रकार से दरिद्र और रोगी होगा।

यदि मातृरेखा में ग्रन्थि चिन्ह दिखाई पड़ें तो मनुष्य हत्यारा होता है। ऐसे जितने चिन्ह होंगे मनुष्य उतनी ही हत्याएँ करेगा।

ऊर्ध्वरेखा।

ऊर्ध्वरेखा सरल, प्रस्फुटित और उज्ज्वल वर्ण होकर यदि मध्यमा अँगुली तक फैली हो तो मनुष्य धनवान्, पुत्रवान् और सब प्रकार से सुख-सौभाग्यवान् होता है।

रक्त-वर्ण-विशिष्ट ऊर्ध्वरेखा यदि अनामिका के मूल स्थान तक गई हो तो मनुष्य समृद्धि-सम्पन्न और सम्भ्रान्त होता है।

जिसकी यह रेखा तर्जनी के मूल भाग में मिल जाती है वह व्यक्ति बहु पुत्रवान्, बहु जनों का स्वामी और सुन्दर अट्टालिका और बड़ी इमारतों का स्वामी होता है।

यदि ऊर्ध्वरेखा सरल उपरेखाओं से कटी और थोड़ी थोड़ी दिखाई पड़ती हो तो मनुष्य स्वस्थ्य, सुन्दर मेधावी और निपुण होता है। इस प्रकार के व्यक्तियों की मति बालकों के समान चंचल होती है। ये लोग प्रायः अस्थिर प्रकृति एवं अध्यवसाय विरहित होते हैं।

यदि ऊर्ध्वरेखा मणिबन्ध के ऊपर पितृरेखा के मूल भाग में विदीर्ण हो अथवा पितृरेखा के साथ द्विकोण, त्रिकोण बनाती हो तो वह व्यक्ति सम्पत्ति और प्रतिपत्ति प्राप्ति के लिए सर्वथा लालायित रहता है और धर्माधर्म से धनोपार्जन करने की चेष्टा में रहता है।

यदि ऊर्ध्वरेखा तरङ्गायित एवं अर्द्ध भाग वक्र हो तो मनुष्य दुष्ट बुद्धि, तस्कर, प्रतारणा-पटु और छद्म वेशधारी होता है। इसके सिवा यदि यह रेखा इसी रूप में दृष्टिगत हो तो वह शुभ फल देती है।

ग्रहों का स्वरूप।

मनुष्यमात्र का करतल सामुद्रिकशास्त्र के आचार्यों द्वारा ग्रहों में विभाजित किया गया है। सम्पूर्ण शरीर के तिलाङ्क आदि का फलाफल भी प्रायः ग्रहों पर अवलम्बित

रहता है अतएव सामुद्रिक शास्त्र एवं तिलाङ्क का फलाफल उचित रूप से समझने के लिये ग्रहोंके स्वरूप का स्पष्टीकरण यहांपर कर देना। उचित प्रतीत होता है जहां तक जान पड़ता है नव ग्रहों में इस शास्त्र पर विचार करने के लिये राहु और केतु को प्रश्रय नहीं मिला। यही कारण है कि ग्रन्थों में उनके स्वरूप पर कोई उल्लेख नहीं मिलता। जिनका उपलब्ध होता है वे क्रमशः इस प्रकार हैं:—

रवि ।

आत्मभाव—पापग्रह, सत्वगुण प्रधान; खर्वाकृति, चतुरस्र, अरुण श्यामवर्ण, मधु पिङ्गल नेत्र, क्षुद्र कुञ्चितकेश, सुगोल गठन, वृद्ध, स्थिरभाव, पित्त प्राकृति, तिक्तरसप्रिय, उत्ताप और स्वल्प शुष्कता उत्पादक, क्षत्रिय, स्वर्ण और चतुष्पद जन्तुका स्वामी, मध्याह्न बली, शष्याधिष्ठाता, पुंग्रह और बनचारी।

ग्रहभाव—आत्मा, दीप्ति, सौभाग्य, आरोग्य, क्षमता, सम्मान, एवं पिता का शुभाशुभ।

अनिकूल गति—पराक्रम, तेज, गाम्भीर्य, शौर्य, दया, मान, सम्भ्रम, सद्व्यय और उच्चपद।

प्रतिकूल गति—प्रगल्भता, अभिमान, अहङ्कार, अवज्ञा, चापल्य, क्रूरता, निष्ठुरता, अपव्यय, पितृधनविनाश, हीनमति, हीनपद एवं अधिकृत देह भाग में रोग और पीड़ा।

नरदेह—अधिकृत देह भाग—मस्तिष्क, हृदय, चक्षु, मुख एवं शरीर का दक्षिणांश आधिक्यकृत मानव—सुगोल गठन, गोल मुख मण्डल, विशाल नेत्र, किंचित कुन्चित केश,

सुस्वर, पित्तप्रधान, सत्वगुण, स्थिर भाव और तिक्तरस प्रिय।

चन्द्र।

आत्मभाव—शुभग्रह, सत्वगुण प्रधान, गौर वर्ण, पृष्ठांङ्ग, खर्वाकृति, पद्मपलाशलोचन, कुन्चित कृष्णकेश, कफ वात, प्रकृति, युवा, वायुकोणाधिपति, अपरान्हवली, गैरिक रौप्यादिक का स्वामी, लवणरसप्रिय, स्निग्ध मण्डल, आर्द्रता उत्पादक, वैश्य एवं जलचारी।

ग्रहभाव—शरीर, स्वभाव, स्वास्थ्य, पीड़ा, भ्रमण, भाग्य, षड्रिपु और माता का शुभाशुभ।

अनुकूल गति—आरोग्य, धीरता, कोमलता, निपुणता, विद्यानुराग, शान्ति, जलपथ से वाणिज्य लिप्सा, उत्तम गति और उत्तम पद।

प्रतिकूल गति—अज्ञता, भीरुता, असन्तोष, अस्थिरता मद्यपान, नीच संसर्ग, नीच वाणिज्य से प्रेम और नीच पद, अधिकृत देह भाग में रोग और मनः पीड़ा।

नरदेह—अधिकृत देह भाग—तालू, कण्ठ, उदर, ग्रन्थि, शोणित, और शरीर का वाम अंश। आधिक्यकृत मानव—पाण्डुवर्ण, पाण्डुनेत्र, गोलमुख मण्डल, पुष्टकाय, खर्वाङ्ग, कर्कश लोम, विलासी, वाग्मी और निर्मलचेता

मंगल।

आत्मभाव—पापग्रह, रक्तरक्त, क्षत्रिय, तमोगुण प्रधान, रूप गौरवर्ण, मज्जासार, हिंस्र, शूर, अग्नितुल्य प्रभावविशिष्ट, मध्यान्हबली, पित्त प्रकृति, उदार तथा अल्प-

गर्वित, युवा, दक्षिण दिशा और गैरिक सुवर्णादि धातु एवं चतुष्पद जन्तु का स्वामी, कटुरस प्रिय, विकृताङ्ग, उत्ताप और शुष्कव उत्पादक और दग्ध भूमिचारी।

ग्रहभाव—क्षेत्र, वीर्य, गृह, भूसम्पत्ति, चिकित्साज्ञान और भ्राता का शुभाशुभ इत्यादि।

अनुकूल गति—साहस, पराक्रम, शौर्य, काम, स्वाधीनता, जयलाभ, और सेना, चिकित्सा, रसायन,, तथा, मकानादि निर्माण सम्बन्धी उच्चपद।

प्रतिकूल गति—अधर्म, अभिमान, दुवर्त्तता, दुस्यता हत्या, विश्वास, घातकता, अति घृण्य उपजीविका, और अधिकृत देह-भाग में रोग।

नर देह—अधिकृत देहभाग—वामकर्ण, कटि, समवादिका नाड़ी एवं गुह्यदेश। अधिक्यकृत मानव—व्रणमय शिर, वृताकर चक्षु सुदृढ़ शरीर, आनत पृष्ठ, पित्तप्रकृति तमोगुण विशिष्ठ और कटुरस प्रिय।

बुध।

आत्म-भाव—शुभग्रह, वर्तुलाकार, शूद्र, रजोगुण प्रधान, पद्मनेत्र, मध्यमाकृति, श्यामवर्ण, वात पित्त कफ़ की सम प्रकृति, सर्वरस प्रिय, उत्तर दिश और सुवर्ण द्रव्याधिपति, प्रभावक्ली, बालक, स्त्रीगृह, कभी आर्द्रता और कभी शुष्कता, ग्राम, तथा श्मशान भूमिचारी।

ग्रह-भाव—वाक्य, शिल्प, विद्या, बुद्ध, वाणिज्य, साहित्य, गणितादि व्यवसाय एवं पितृव्य, मातुल एवं शिष्यादि का शुभाशुभ इत्यादि।

अनुकूल गति—धी शक्ति, कल्पना शक्ति, पाण्डित्य, वक्तृता शक्ति, शिल्प नैपुण्य, वाणिज्य कौशल, न्यायपरता, श्रेष्ठ रचना शक्ति, साहित्य अध्यापना और व्यवसाय।

प्रतिकूल गति—मूर्खता, वाचालता, रहस्य भेदकता, उन्मत्तता, चौर्य, त्रास, दूत आर्थिक हीन वृत्ति और अधिकृत देह भाग में रोग।

नरदेह—अधिकृत देह भाग—वाक्य, बुद्धि, जिह्वा, पित्त, त्वक और शरीर का अधः प्रदेश। आधिक्याकृत मानव-न छोटा न बड़ा शरीर, कुंचित केश, समाङ्ग, सरल-नासिका, वात, पित्त कफ़ की सम प्रकृति और सर्वरस प्रिय।

बृहस्पति।

आत्मभाव—शुभग्रह, ब्राह्मण, पीत वर्ण, वर्तुलाकार, सत्वगुण प्रधान, समप्रकृति, पिङ्गल नेत्र, सुस्वर विशिष्ट, खर्वाकृति, मधुररस प्रिय, वृद्ध, ईशानदिक पति, प्रभात-बली, द्विपद, प्राणि शोभन रत्न और देवालय स्वामी, परिमित उत्ताप, आर्द्रता उत्पादक और ग्रामचारी।

ग्रहभाव—धन, धर्म, पुत्र, ज्ञान, गुरु और धर्मादि व्यवसाय का शुभाशुभ बृहस्पति से निर्णित होता है।

अनुकूल गति—धार्मिकता, न्यायपरता, वदान्यता, सदात्मा, सच्चरित्र, विश्वास, शास्त्रज्ञान, तत्वज्ञान, उच्चा-भिलाष एवं धर्म शास्त्रादि मूलक महोच्चपद।

प्रतिकूल गति—प्रगल्भता, धूर्तता, अभिमान, अभियोग लिप्सा, मिथ्या साक्ष्य, तथा विदूषक आदि के कार्य और अधिकृत देह-भाग में रोग।

नरदेह—अधिकृत देह भाग-फुफ्फुस, रक्तवाहिनी नाड़ी हृदय का मेद, कण्ठ और हाथ। आधिक्यकृत मानव—स्थूल-काय, सूक्ष्म कुंचित केश, दीर्घ कपाल, गजदन्त, पिङ्गल चक्षु, क्षुद्रग्रीव, विशाल वक्षस्थल, दीर्घ और क्षीण निम्नदेश, सम-प्रकृति, और सत्वप्रधान।

शुक्र।

आत्मभाव—शुभ ग्रह, ब्राह्मण, रजोगुण, शुक्ल वर्ण कफ प्रकृति, सरलबाहु, गजगामी, अम्लरस प्रिय, क्रीड़ारस प्रधान, मध्यवयस्क, अग्निकोणाधिपति अपरान्हवली, धान्य रौप्यादि का स्वामी, स्निग्ध दीप्ति, द्विपद अपेक्षाकृत आर्द्रता उत्पादक, स्त्री ग्रह और जल भूमिचारी।

ग्रहभाव—विलास, भूषण, सुख, स्त्री, सङ्गीत, विज्ञान, चित्र विद्या, भूतत्व, जाया तथा अग्नि का शुभा-शुभ इस ग्रह से देखा जाता है।

अनुकूल गति—पवित्र प्रमोद, शान्त, धीरता, प्रफुल्लता, सामाजिकता, सुगन्ध, सजव, सङ्गीत, षोड़शीलिप्सा, शास्त्र, गीत रत्नादिक व्यवसाय, सुकवि, सुचित्रकारादि संभ्रान्त पद।

प्रतिकूल गति—मूर्खता, लम्पटता, मद्यपी, नीचसङ्ग, प्रियता, भीरुता, मानवमान बोध रहित, सामान्य वस्त्रालं-ङ्कारादि व्यवसाय, रमणदूत प्रभृति जघन्य वृत्ति एवं अधि-कृत देह भाग में रोग।

नरदेह—अधिकृत देह भाग—नासारन्ध्र, मांस, यकृत और शुक्र।

आधिक्यकृत मानव—सौम्य मूर्ति, मध्यमा कृति, उज्वल नेत्र, उन्नत नासिका, प्रचुर चिक्कण केश, चिबुक, गण्डस्थल, कफ प्रकृति और विलासी ।

शनि ।

आत्मभाव—पाप ग्रह, शूद्र, नीलवर्ण, दीर्घाकार, अतिवृद्धि, सन्ध्या वली, पश्चिम दिक् पति, लोह धातु, तथा वालुका भूमि का स्वाम्य, अति चपल, कुपित वायु प्रकृति, स्थूल नख, पिङ्गल नेत्र, खल, जटिल, कृश, शिथिल शरीर, अलस, स्त्री सह, कषायरस प्रिय, तमोगुण प्रधान, अपेक्षाकृत आर्द्रता उत्पादक और वनचारी ।

ग्रहभाव—सम्पत्ति, संसार, दास, दासी, यानवाहन इत्यादि शुभाशुभ, वृद्ध संन्यासी, सारथि, कृषि भृत्य, और नीच मानवों का विचार शनि से किया जाता है ।

अनुकूल गति—धैर्य गाम्भीर्य, अध्यवसाय, परिश्रम, सहिष्णुता, सुगभीर बुद्धि, दूरदर्शिता एवं खनि-पति भूमध्याधकारी, कृषकादिपद तथा काष्ठादिका व्यवसाय ।

प्रतिकूल गति—अति चापल्य, आलस्य, अनुत्साह, असहिष्णुता, घोर मूर्खता, अति हेय जघन्य चाण्डाल वृत्ति, और अधिकृत देह-भाग में रोग ।

नरदेह—अधिकृत देह भाग—दक्षिण कर्ण, प्लीहा मस्तिष्क शिरा तथा मूत्राशय । आधिक्यकृत मानव—दीर्घ कृश देह, अल्पकेश, विकृत दन्त, क्षुद्र नेत्र, विस्तृत कार्य, कृश तथा निम्नदेश, अधरोष्ठ और नासिका स्थूलता सम्पन्न, क्रूर वायु और कफ प्रकृति ।

ग्रहों का शिखा स्थान ।

प्रत्येक अँगुली के पाददेश में–करतल के मध्य में जो कुछ ऊँचा सा स्थान दिखाई पड़ता है उसे उस अँगुली के अधिष्ठाता ग्रह का शिखा-स्थान कहते हैं। यह पहले

शुक्र ही कहा जा चुका है। यदि शुक्र का शिखा-स्थान अर्थात् पितृरेखा और अँगूठे के मूल का भाग स्वच्छ, उज्ज्वल और सुन्दर दिखाई दे एवं कतिपय रक्त वर्ण सुदृष्य, क्षुद्र एवं सूक्ष्म रेखाएँ दिखाई पड़ें तो वह पुरुष और नारी सर्वथा प्रफुल्ल, नृत्य गीतादि प्रिय, भोग बिलासी और कामान्ध होती है।

शुक्र के शिखा-स्थान में यदि नक्षत्र चिन्ह खूब स्वच्छ दिखाई पड़े तो ये नर-नारी वाञ्छित प्रणय से सर्वत्र सफल मनोरथ होते हैं और उससे पूर्ण परितोष और परम सुख प्राप्त करते हैं।

यदि शुक्र के शिखा-स्थान में रोम अथवा बहु संख्यक एक प्रकार के चिन्ह हों तो मनुष्य अल्प बुद्धि, अरसिक, अप्रेमिक और म्लेच्छ होता है।

स्त्रियों के अँगूठे का ऊपरी भाग जहां नख रहता है, क्रास के समान दिखाई दे तो वह स्त्री दुष्टा, मायाविनी और अहितकारिणी होती है। बुद्धिमान् पुरुष इस प्रकार की स्त्रियों से अपना संबंध तोड़ने में ज़राभी बिलम्ब नहीं करते।

जिस नारी के अँगूठे के मूल में शुक्र के शिखा-स्थान के निकट वृत्त के आकार का कोई चिन्ह दिखाई पड़ता है वह नारी हज़ारों पुरुषों के सम्भोग से भी तृप्त नहीं होती।

यदि अँगूठे के प्रथम भाग के निकट दो या तीन क्रास चिन्ह हों तो वे नर-नारी अवशीभूत, अविनयी, विवाद प्रिय, वाचाल, दुष्ट भाषी और दुर्बल होते हैं। यदि प्रथम भाग में न होकर दूसरे भाग में ये चिन्ह हों तो सम्पूर्णतः उससे विपरीत फल होता है। अर्थात् वह नारी और पुरुष विज्ञ, भक्तिमान, सुशील, सुजन और अति धार्मिक होता है।

जिस नारी के अँगूठे के दूसरे भाग में, सन्धि स्थान के समीप नक्षत्र चिन्ह अथवा रेखा पुञ्ज होता है उसका विवाह छोटी उम्र में हो जाता है। वह बड़ी ही अभागिनी होती है। पति के हाथ से उसकी मृत्यु की आशंका बनी रहती है।

वृहस्पति के शिखा-स्थान में यदि एक अथवा दो क्रास चिन्ह दिखाई पड़ें तो मनुष्य उच्च पद, आधिपत्य, सम्भ्रम एवं विवाह से सुखी होता है। यदि इस ग्रह वृहस्पति के शिखा-स्थान में एक नक्षत्र चिन्ह होतो मजाय, अपयश, अनादर और अधोगति को प्राप्त होता है। यदि दो नक्षत्र चिन्ह हों तो इसके विपरीत फल होता है। अर्थात् मनुष्य सुयश, सम्भ्रम और उन्नति प्राप्त करता है।

यदि आयु रेखा से शाखा रेखा निकल कर वृहस्पति की शिखा के दो खण्ड करती हो तो उस मनुष्य का अचानक अपघात होगा।

यदि तर्जनी के दूसरे भाग में दो अथवा तीन रेखाएँ हों तो स्त्री सती और सुलक्षण होती है। सूतिका-ग्रह में इसकी मृत्यु होती है।

यदि तर्जनी के प्रथम भाग के ऊपर द्वितीय भाग के सन्धिस्थान में दो समान रेखाएँ हों तो मनुष्य सत्प्रकृति, पुण्यवान, धर्मशील और उत्साही होता है।

शनि के शिखा-स्थान में, स्त्री के हाथ में, यदि दो समान्तर रेखाएँ हों तो वह बहुत बच्चे उत्पन्न करेगी। कन्या शनि की अपेक्षा इसके अधिक पुत्र होंगे।

यदि इस शिखा-स्थान में मध्यमा अँगुली के मूल से कोई रेखा आकर मिली हो और यह रेखा अन्य दो छोटी छोटी रेखाओं से दो क्रासों के आकार में कटी हों तो मनुष्य सदा दास-वृत्ति करेगा, और कारावास भोगेगा।

यदि आयु रेखा से कोई रेखा आकर शनि की शिखा को विभाजित करे तो वह व्यक्ति संसार चिन्ता से चिन्तित, उत्कंठित और सर्वदा उदास रहता है। ऐसे व्यक्ति सौभाग्य के लिए प्रयत्न शील रहने पर भी कभी सुखी नहीं होते।

स्त्री की मध्यमा अँगुली के प्रथम सन्धि स्थान से यदि पाँच, छै, सात अथवा आठ रेखाएँ निकलकर द्वितीय सन्धि स्थान तक जायँ तो वह स्त्री इतनी ही संख्या में पुत्रोत्पन्न करेगी। यह पुत्र-सन्तान सदा दुखी और अभागी होते हैं।

मध्यमा अंगुली के प्रथम सन्धि स्थान में यदि नक्षत्र चिन्ह हो तो प्रकाश्य अथवा गुप्त हत्या से उस व्यक्ति की मृत्यु होगी।

शनि के शिखा स्थान में यदि अनेक रेखाएँ हों तो पुरुष दुखी, दरिद्र, भीरु, कापुरुष और दुष्ट व्यक्तियों के

कारण कारावास भोगता है।

तीस वर्ष की आयु बीतने पर यदि शनि के शिक्षा स्थान में दो आसामान्य रेखाएँ दिखाई पड़ें तो यह निश्चय समझना चाहिए कि उस व्यक्ति पर किसी शत्रु द्वारा हत्या का मिथ्यापराध लगाया जायगा। ऐसे लोगों को भाग कर दूसरे देश में आश्रय लेना चाहिए। इसके सिवा बचने का कोई दूसरा उपाय नहीं है।

यदि सूर्य के शिक्षा स्थान में कतिपय अखण्डित रेखाएँ हों और यदि वे अनामिका के सन्धिस्थान से उत्पन्न होकर आयुरेखा तक जायँ तो वह व्यक्ति धर्म प्रकृति, सूक्ष्म

सूर्य

बुद्धि, विविध विद्यारत, गर्वित, आत्म मत प्रेक्षी और विचित्र वाक्यपटु होता है। केवल वाक्य के बल से यह व्यक्ति राजा, तथा राजा के समान आदरणीय व्यक्तियों की सहायता से अतिशय धनशाली होता है।

यदि ऊपर वर्णित रेखाएँ अखण्डित न होकर छिन्न भिन्न हों-बहुधा विस्तीर्ण एवं कुंडाकार हों तो उपर्युक्त फल के विपरीत फल होता है। इतना ही नहीं बल्कि वह व्यक्ति अति दरिद्र, चरित्र हीन, मिथ्या-कलंक भोगी और अपयश प्राप्त करता है। कभीकभी तो ऐसा देखा गया है कि वह व्यक्ति सम्बल शून्य और मार्ग का भिखारी होता है।

यदि सूर्य के शिक्षा स्थान पर क्रास का चिन्ह हो तो वह व्यक्ति बड़ा कंजूस होता है।

यदि आयुरेखा से कुछ छोटी छोटी रेखाएँ निकल कर समान्तर भाव से अनामिका के सन्धिस्थान में जाकर मिल

जाएँ और यदि परस्पर न मिलें तो वह व्यक्ति सदा आकाश कुसम के लिए दौड़ता रहेगा अर्थात् अप्राकृत विषय को सामने रखकर सर्वदा उसी के सुख में विभोर रहेगा।

यदि अनामिका के प्रथम भाग में कतिपय सरल और समान्तर रेखाएँ हों तो मनुष्य सत् स्वभाव विशिष्ट होता है और अपने श्रम और बुद्धि बल से धनशाली होता है। यदि ये रेखाएँ प्रथम भाग में न होकर अनामिका के दूसरे भाग में हों तो मनुष्य अपने गुण विशेष के कारण समाज में आदरणीय और माननीय होता है। फिर भी वह सदा दारिद्र से पीड़ित और दुखी बना रहता है।

यदि अनामिका के द्वितीय और तृतीय भाग के मध्य स्थित सन्धिस्थान में नक्षत्र अथव क्रास चिन्ह दिखाई पड़े तो वह व्यक्ति धन का उत्तराधिकारी होता तो है परन्तु, हतभागी होता है। इस प्रकार के व्यक्ति संसार में दुख भोगने के लिए हो पैदा होते हैं। इन लोगों के भाग्य में शोक, मर्मदाह और कारावास भोगना ही लिखा रहता है।

अनामिका के तीसरे भाग के मस्तक पर यदि कुछ रेखाएँ दिखाई पड़ें तो वह व्यक्ति निश्चय ही अवकाश और विश्राम शून्य, सर्वदा अभाव विशिष्ट और दरिद्र होगा। ये लोग बातें तो बहुत करते हैं पर कामके वक्त अकर्मण्य हो जाते हैं। इस प्रकार के लोगों को व्यर्थ के कामों में फँसा हुआ देखकर नाश होते हुए देखा जाता है।

जिस पुरुष या स्त्री की आयु रेखा से एक सरल और स्पष्ट रेखा निकलकर अनामिका के सन्धिस्थान को स्पर्श

करती है उन्हें दूसरों का धन प्राप्त होता है। अनामिका के जिस भाग में यह रेखा पूरी होगी उस भाग के निर्दिष्ट मास में उसे धन की प्राप्त होगी।

बुध का शिखा-स्थान यदि उत्तम वर्ण विशिष्ट, समोन्नत एवं समाकृति दिखाई पड़े तो मनुष्य असार वासना-

बुध　विरहित, महद्विषय प्रयासी, दृढ़ता सम्पन्न, शिल्प विद्यानादि विशारद और प्रभूत न्याय परायण और लोक समाज में प्रतिष्ठा प्राप्त करता है।

यदि बुध का शिखा-स्थान असमान हो और विभिन्नाकृति सरल रेखाएँ दिखाई दें तो वह व्यक्ति अनुग्र प्रकृति, भाग्यवान, विश्वस्त, बहुमिथ्याभाषी और स्त्रीप्रेमी होता है।

यदि कनिष्ठा के मूल भाग से कुछ रेखाएँ निकल कर बुध के शिखा-स्थान में फैल जाँय तो समझना चाहिए कि वह व्यक्ति लोक समाज में विद्या का भानु प्रकाश करता है। ये लोग प्रतारणा परायण होते हैं।

यदि करतल के ऊपरी भाग में कुछ रेखाएँ बुध की शिखा भेद करके अनामिका के मूल भाग से मिल जावें तो वह व्यक्ति मिथ्या परायण, छद्म ज्ञानी और अस्थिर प्रकृति होता है। ये लोग झूठी प्रतिज्ञा करके लोगों को धोखा देते हैं। विशेषतः यदि ये रेखाएँ कुंजाकार हों तो चाहे जो हो मनुष्य कपटी होता है और मध्यावस्था में कोई ऐसा जघन्य कार्य कर बैठता है जिससे वह शेष जीवन पर्यन्त दग्ध होता रहता है।

मंगल का क्षेत्र

मातृरेखा,पितृरेखा और उद्ध्‌व रेखा इन तीनों रेखाओं के मध्यवर्ती त्रिकोणाकार स्थान को "मंगल का क्षेत्र" कहते हैं। मंगल का क्षेत्र-स्थान यदि नीचा,गढ्ढे के समान हो और तद्गत रेखाएँ कुंज अथवा वक्रभाव विशिष्ट हों तो मनुष्य भयंकार रूप से शस्त्राहत होगा। यदि ऐसा न होता तो वह किसी ऊँचे स्थान से गिर कर अङ्गहीन होगा और बड़ी चोट प्राप्त करेगा।

यदि शनि के शिखा स्थान से कोई रेखा आकर मङ्गल के क्षेत्र में प्रवेश करे तो मनुष्य वन्दी, कारावासी और दासत्व भोगी होता है। इतना ही नहीं ऊपर से रोग, शोक और मनस्ताप प्राप्त करता है।

यदि मणिवन्ध और प्रकोष्ठ स्थान से कोई रेखा निकलकर मङ्गल के क्षेत्र से होकर चन्द्र-क्षेत्र में प्रवेश करे तो व्यक्ति अस्थिर जीवन, उत्कण्ठित एवं नाना स्थान वासी होता है। मङ्गल की प्रतिकूल प्रकृति प्राप्त होने से ऐसे व्यक्तियों को शान्ति नहीं प्राप्त होती।

यदि मंगल के क्षेत्र में पितृरेखा के पासवाली रेखा पूरी होती हुई दिखाई पड़े तो मनुष्य दाम्भिक, वृथा गर्वित, क्रोधी, अधीर, सन्दिग्ध हृदय, प्रतारक, चोर, प्रलोभनकारी, विश्वासघातक और हत्यारा होता है।

यदि मङ्गल के क्षेत्र में अन्य कोई छोटा सा त्रिकोण दिखाई पड़े और वह आयु रेखा की ओर जावे तो मनुष्य, सुख, सम्भ्रम, ख्याति और जयलाभ करता है। यदि अधो-

भाग प्रकोष्ठ की ओर जावे तो दुःख, अनादर, अख्याति, पराजय प्रभृति दुर्भाग्य जनित घटनायें होती हैं ।

यदि मङ्गल के क्षेत्र में वज्र, अथवा क्रास चिन्ह दिखाई पड़े और वह मातृरेखा के निकटवर्ती न होकर अन्य स्थान में हों तो मनुष्य, समाज-मान्य और परम मित्रवान् होता है । यदि वह मातृरेखा के समीप हो तो मनुष्य भाग्य शून्य, नगण्य एवं सर्वदा शत्रु-पीड़ित होता है । ये लोग अपने ही दोष से लोक में शत्रुता उत्पन्न कर लेते हैं ।

चन्द्र के क्षेत्र अथवा चन्द्र मण्डल में कृष्ण वर्ण की आभा अथवा मलिन रेखाओं के चिन्ह दिखाई दें तो वे चन्द्र-मण्डल दुर्भाग्य को प्रदर्शित करती हैं ।

चन्द्र-मण्डल स्थित रेखाओं की समाकृति, परिस्फुट एवं उज्ज्वल वर्ण विशिष्ट होने से मनुष्य भाग्यवान होता है । ये प्रवास में सुख प्राप्त करते हैं । यदि इस प्रकार के चिन्ह स्त्रियों के हाथ में हों तो वे अनेक बच्चों की माँ होती हैं । प्रसवकाल के समय इन्हें कोई वेदना नहीं होती ।

चन्द्रमण्डल में वृत्तवत् गोलाकार चिन्ह दिखाई पड़ने से मनुष्य अन्धा अथवा भग्न स्वास्थ्य और रोगी होता है ऐसे व्यक्ति यक्ष्मा पक्षाघात, वातव्याधि प्रभृत दीर्घरोग युक्त होते हैं ।

यदि चन्द्र के क्षेत्र में नक्षत्राकृति चिन्ह परिदृष्ट हो तो जानना चाहिए कि उस व्यक्ति के हृदय में कोई विश्वासघात करनेकी बात उठी है जिसके निमित्त वह व्यक्ति यत्नशील है। इस प्रकार के चिन्ह से मनुष्य चरित्र हीन होता है ।

यदि चन्द्र-मण्डल में वज्र अथवा क्रास दिखाई पड़े तो मनुष्य शिथिल स्वास्थ्य और धर्म-प्रकृति होता है। यदि इस प्रकार के पाँच चिन्ह हों तो मनुष्य सदा रोगी होता और २ वर्ष की आयु तक जीवित रहेगा। मृत्यु के कुछ समय पहले पाँच में से एक चिन्ह लुप्त हो जाता है।

विविध रेखाएँ।

यदि किसी अँगुली के मस्तक पर कोई रेखा दिखाई दे तो, उस मास को प्रदर्शित करने वाले मास में मनुष्य को जल में डूबना चाहिए।

अँगूठे के सन्धिस्थान के निम्न भाग में यदि कोई रेखा हो तो मनुष्य कभी बहु धन-सम्पन्न न होगा। यदि दो रेखाएँ हों तो उक्त मनुष्य दूसरे के धनका उत्तराधिकारी होगा। ये रेखाएँ बड़ी और स्पष्ट हों तो बहुतसा धन नष्ट हो जाता है।

शुक्र का शिखा-स्थान अर्थात् अँगुष्ठ का मूल भाग स्थित करतल भाग यदि अपेक्षाकृत उच्च अथवा स्तूपाकृति हो तो वह व्यक्ति विलासी और लम्पट होता है।

शुक्र के शिखा-स्थान के ऊपर अँगूठे के मूल देश में जितनी रेखाएँ दिखाई पड़ेंगी स्त्री उतनी ही सन्तान उत्पन्न करेगी। यदि ये रेखाएँ करतल के पूर्व भाग तक विस्तृत हों तो स्त्री उतने ही पुरुषों के साथ भोग करेगी।

यदि पितृरेखा मध्यस्थान में विच्छिन्न अथवा दो भाग में विभक्त हो तो मनुष्य को भयंकर अस्त्राघात् प्राप्त होगा।

तर्जनी और मध्यमा के मूल के मध्यवर्ती सन्धिस्थान से अनामिका और कनिष्ठा के मूल के सन्धिस्थान तक जो रेखा शनि और रवि के शिखा-स्थान तक परिव्याप्त रहती है उसको शुक्र पारिजात रेखा कहते हैं। जिसके हाथ में यह रेखा अखण्ड, उज्ज्वल और स्फुटित होती है वह व्यक्ति भोग विलासी होता है। यदि दूसरी रेखाओं से कटी हुई अथवा स्पर्श करती हो तो मनुष्य के लिए शुभ होता है।

ऊर्ध्व रेखा के मूल देश से कुछ अन्तर से कनिष्ठा के मूल तक–बुध के शिखा स्थान तक जो रेखा चन्द्र मण्डल में विस्तृत रहती है उससे वह व्यक्ति इन्द्रिय परायण, अन्यत्र-स्थचित्त, अविवेकी, अति तरल और चपल प्रकृति होता है। अन्य रेखाओं के द्वारा स्पर्श तथा कटी होने से शुक्र पारिजात रेखा के समान इस रेखा की कर्तृत्व शक्ति नष्ट हो जाती है।

आयुरेखा यदि एकाग्र अर्थात् शाखा शून्य होकर मध्यमा के मूल में मिल जाय तो समझना चाहिए कि वह मनुष्य अपने दोष से मृत्यु के मुख में जा रहा है। ऐसे व्यक्ति को निर्दिष्ट दोष से बचा लेना मानों अकाल मृत्यु से उसकी रक्षा होना है।

मृत्युरेखा यदि आयु रेखा के मध्यस्थान में आवक्र हो तो वह व्यक्ति अपने दोष से आत्मघाती होगा। सतर्क रहने से वह व्यक्ति मुक्ति भी पा सकता है।

तर्जनी के मूल की ओर आयुरेखा और मातृरेखा का मध्यवर्ती स्थान यदि बड़ी दूर तक रेखा शून्य हो तो वह

व्यक्ति निर्दयी, लोभी, मिथ्याकारी और अभागी होता है।

यदि पितृरेखा और ऊर्ध्व रेखा का मूल भाग एकत्र संस्थित न हो तो वह व्यक्ति, अविवेचक, अमित व्ययी और असत्यवादी होता है।

सूर्य के शिखा स्थान में अर्थात् अनामिका के मूल देश में यदि कंकण की आकृति का कोई चिन्ह हो तो वह व्यक्ति कृतघ्न और तस्कर होगा।

मङ्गल के क्षेत्र में यदि त्रिकोण हो और यदि उसका कौना ऊर्ध्व रेखा की ओर हो, और किसी दूसरी रेखा से कटा हुआ हो तो वह व्यक्ति पितृघाती होता है

मङ्गल के त्रिकोण के भीतर यदि चतुष्कोण चिन्ह हो तो वह व्यक्ति अल्प बुद्धि होता है।

मातृरेखा के निम्न प्रान्त में, चन्द्र के क्षेत्रमें, वृत्ताकार चिन्ह रहने से, और रेखा के वाम पार्श्व में स्थित रहने से वाम चक्षु और दक्षिण पार्श्व में रहने से दक्षिण चक्षु विनष्ट होगा। यदि रेखा के दोनों ओर ऐसे दो चिन्ह हों तो उस मनुष्य की दोनों आँखें नष्ट होंगी।

आयुरेखा का ऊपरी भाग यदि दो भाग में होकर एक वृहस्पति के शिखास्थान में तर्जनी के मूल में और दूसरा भाग पितृरेखा को उत्तीर्ण कर अँगूठे की ओर जाता हो तो वह व्यक्ति महामति, मनोहर और महा भाग्यवान होता है।

कनिष्ठा के पहिले भाग में क्रास का चिन्ह रहने से मनुष्य मूर्ख होता है।

यदि सूर्य के शिखा-स्थान में अर्थात् अनामिका के मूल

देश में वाम दिशा की ओर आवक्र, नीचे की ओर जाती हुई दो सरल और क्षुद्र रेखाएँ हों तो वह व्यक्ति ज्ञानवान्, माननीय और श्रद्धास्पद होता है।

यदि कनिष्ठा के प्रथम सन्धिस्थान से सरल रेखा, द्वितीय सन्धि भेद करजाय तो वह व्यक्ति अतिशय प्रतिभा सम्पन्न होता है।

कनिष्ठा के मूल में अर्द्धचन्द्राकृति चिन्ह से आकस्मित मृत्यु होती है।

मध्यमा के प्रथम भाग में त्रिकोण चिन्ह रहने से मनुष्य सौभाग्य हीन होता है।

वृहस्पति के शिक्षा-स्थान में त्रिकोण रहने से मनुष्य भाग्ययुक्त और धन सम्पन्न होता है।

करतल में अनेक रेखाएँ होने से मनुष्य कष्ट भोगी और अभागी होता है। थोड़ी रेखाएँ होने से दुखी और दरिद्र होता है। स्त्री के हाथ में बहुत रेखाएँ हों तो वह, विधवा होती है। रक्त वर्ण रेखाएँ सौभाग्य-सूचक और कृष्ण वर्ण रेखाएँ दुर्भाग्य सूचक होती हैं।

आयुरेखा यदि तर्जनी के मूल देश से वहिर्भाग पर्यन्त विस्तृत हो तो आयु १२० वर्ष की होगी। यदि तर्जनी तक हो तो १०० वर्ष, यदि तर्जनी और मध्यमा के सन्धिस्थल पर्यन्त हो तो ७० वर्ष, यदि मध्यमाके मूल तक हो तो ६० वर्ष, इसकी अपेक्षा क्षुद्र आयु रेखा अति अस्फुट, सरक्तवर्ण, सरल और अविच्छिन्न होकर यदि अनामिका के मूल को स्पर्श करे तो वह मनुष्य दीर्घायु होता है।

आयुरेखा यदि किसी क्षुद्र रेखा द्वारा कटी हो तो वह व्यक्ति अल्पायु होता है। यदि अनेक रेखाओं से आयुरेखा छिन्न-विच्छिन्न हो तो अपमृत्यु होती है। यदि आयुरेखा मूल में स्थूल होकर क्रमशः सूक्ष्माकार धारण करे तो मनुष्य भाग्यवान होता है। और जिसकी यह रेखा मूल में सूक्ष्म और स्थूलाग्र होती है वह दुर्भागी होता है। यदि यह रेखा किसी स्थल पर बिना किसी रेखा के खण्डित होजाय तो उसी उम्र में वह व्यक्ति कहीं से गिर कर मृत्यु को प्राप्त होता है।

यदि उर्ध्वरेखा तर्जनी के मूल तक गई हो तो मनुष्य सम्भ्रान्त पदारूढ़ और धर्म विरिहत होता है। यदि मध्यमा के मूल तक हो तो पुत्र पौत्रादि विशिष्ट, विभव शाली और सुख सम्पन्न होता है। यदि उधर्व रेखा अनामिका के मूल पर्यन्त गई हो तो मनुष्य, पुत्र, पौत्र, गृहादि युक्त व्यापारी और सुख दुख सम्पन्न होता है।

मातृरेखा का निम्न प्रान्त यदि रति पताका की ओर बहु शाखा विशिष्ट हो तो वह व्यक्ति अकर्मण्य और विलासी होता है।

यदि स्त्री के अंगूठे के मूल तक कोई रेखा हो तो वह पति-घातिनी होती है।

शुक्र के शिखा—स्थान में और अंगूठे के पाद स्थल में जितनी सरल और उज्वल रेखाएँ होंगी मनुष्य के उतने की भ्राता और भगनियां होंगी। इन रेखाओं की कृषताई तथा क्रम सूक्ष्म रहने से उनका कलंक और मृत्यु प्रगट होतीहै।

अंगूठे के मूल में युग्म रेखा रहने से मनुष्य अतिशय मातृ-भक्त होता है। यदि इस स्थल पर वज्र चिन्ह हो तो व्यक्ति विपुल भोग सम्पन्न होता है।

अंगूठे के मूल भाग में कुण्डली रेखाएँ होने से मनुष्य भाग्यवान् और सुखशील होता है।

कनिष्ठा के मूल में रेखा होने से मनुष्य सौभाग्यवान होता है।

स्त्री की अनामिका का रेखा पुंज छिन्न भिन्न रहने से वह स्त्री कलह प्रिय, मध्यमा रेखा छिन्न होने से कुटिला, कनिष्ठा-रेखा छिन्न होने से दुखिनी और तर्जनी रेखा छिन्न रहने से विधवा होती है।

कनिष्ठा, अनामिका, मध्यमा, तर्जनी आदिक अंगुलियों के भागों की रेखाएँ प्रथक् प्रथक् गिनने से बारह होने से मनुष्य सुखी, धन धान्य सम्पन्न; तेरह होने से महा दुखी और महा क्लेश भोगी, चौदह होने से पापी, पन्द्रह होने से चोर, सोलह होने से ज्वारी, सत्रह होने से झूठा; अठारह होने से अधार्मिक; उन्नीस होने से ऋणी, मानी और लोक पूजित; बीस होने से तपस्वी और इक्कीस होने से महात्मा होता है।

तिलाङ्क।

मनुष्य के अङ्ग स्थित तिल, चक्र, मशक, आवर्त, और मुद्रा आदि से भी उसके जीवन का लक्षणालक्षण तथा शुभाशुभ फल निश्चित किया जाता है। ये चिन्ह विशेष विशेष

अङ्ग में स्थिर होकर विशेष विशेष प्रकार का फल देते हैं। आकृति, गठन, परिमाण, और वर्ण भेद से भी फल में न्यूनता तथा आधिकता होती है। तिलादि चिन्हों की आकृति तथा परिमाण जितना वृहत होता है अथवा वर्ण जितना गाढ़ होता है निर्दिष्ठ शुभाशुभ फल भी उसी परिमाण में बढ़ जाता है। और चिन्ह जितना छोटा तथा फीका होगा, उसका फल भी उतना ही कम जायगा। गोल चिन्ह रहने से फल अच्छा होता है। विषम तथा आवक्र गठन रहने से अनेकांश में शुभ होता है। त्रिकोणाकृति होने से शुभाशुभ--मिश्रित फल होता है। यदि ये चिन्ह लोमाछिन्न हों तो मनुष्य का दूर दृष्ट और यदि अल्प लोमाछिन्न हों तो शुभादृष्ट जानना चाहिये।

मनुष्य के ललाट दक्षिण भाग में यदि तिलादि चिन्ह दिखाई दे तो व्यक्ति अपने जीवन काल में, किसी समय धनवान-आदरणीय होगा।

यदि दक्षिण भौंह में ऐसा चिन्ह दिखाई पड़े तो उस व्यक्ति का प्रथम वयस में विवाह होगा। और गुणवती स्त्री प्राप्त करेगा। यदि स्त्री होगी तो वह सद्गुण सम्पन्न स्वामी प्राप्त करेगी।

यदि ऐसे चिन्ह ललाट के वाम भाग एवं भौंह में दिखाई पड़े तो आशा भंग और कार्य नाश होता है।

आंखों के कोने के बाहिरी ओर ऐसा चिन्ह रहने से मनुष्य शान्तप्रकृति, विनीत और अध्यवसाय सम्पन्न होता है। ऐसे पुरुषों की मृत्यु अपघात से होती है।

गण्डस्थल तथा कपाल में ऐसे चिन्ह रहने से मनुष्य मध्य चित्त सम्पन्न होता है। ये लोग कितना ही यत्न और चेष्टा क्यों न करे कभी अधिक धनवान नहीं होते। इसके सिवाय चाहे जितने अमितव्ययी अथवा अत्याचारी क्यों न हों आदमी कभी दरिद्र नहीं होता।

नाक के ऊपर तिलादि चिन्ह रहने से मनुष्य को अधिकांश स्थल में कार्य-सिद्ध होती है।

अधर पर चिन्ह होने से मनुष्य प्रेमिक और बलशाली होता है। चिबुक में चिन्ह रहने से मनुष्य महासौभाग्य सम्पन्न और लोकमान्य।

गले में चिन्ह रहने से मनुष्य अतिदीन और दुरवस्थापन्न होता है। ऐसे व्यक्ति शेष अवस्था में अकस्मात् प्राप्त द्रव्य से समाजमें लब्ध प्रतिष्ठित होजाते हैं।

कण्ठ में चिन्ह रहने से मनुष्य विवाह से सुखी होता है।

वक्षस्थल के दक्षिण भाग में चिन्ह रहने से मनुष्य को दैव दुर्विपाक में पड़कर सर्व स्वान्त होना पड़ता है। ऐसे व्यक्तियों को अधितर कन्याएँ हीं होती हैं।

वक्षस्थल के मध्यभाग में चिन्ह रहने से मनुष्य जिस कार्य में हाथ डालता है। प्रायः उसी में सुप्रसिद्ध होता है। इन व्यक्तियों को पुत्र अधिक होते हैं।

यदि वक्षस्थल के वामांश के अधोभाग में स्तन के नीचे चिन्ह दिखाई पड़े तो मनुष्य अस्थिर चेता, आलस्य प्रिय, उग्र प्रकृति और तरल मति होता है। स्त्री बुद्धिमती,

प्रगाढ़ प्रेमवती और सुख प्रसविनी होती है।

दक्षिण पंजर में चिन्ह रहने से मनुष्य निर्बोध और कापुरुष होता है । ये बड़े कष्ट से कर्म-साधन कर-पाते हैं।

पेट में चिन्ह रहने से मनुष्य दीर्घ सूत्री, स्वार्थपर और बहुभोजी होता है।

नितम्ब में चिन्ह रहने से मनुष्य के अनेक सन्तान होती है जिनमें कुछ जीवित रहती है। ये सन्तान सहिष्णु, स्वास्थ्यवान और कामुक होती है।

दक्षिण जंघा में चिन्ह रहने से मनुष्य धनवान होता है। ये लोग प्रायः विवाह से सौभाग्य-संचय करते हैं।

बायें—जंघा में चिन्ह रहने से मनुष्य दरिद्र और मित्र हीन होता है। ऐसे व्यक्ति पड़ोसियों कीशत्रुता और व्यवहार से दुखी होते हैं।

दक्षिण घुटने से नीचे चिन्ह रहने से मनुष्य अति मनोरमा स्त्री और स्त्री होने से अर्थात् मनोहर पति प्राप्त करता है। इनके जीवन में बहुत ही कम दुख होता है।

बाम घुटने से नीचे चिन्ह रहने से मनुष्य उग्र प्रकृति अविवेचक, और क्षिप्रकारी होता है। ऐसे व्यक्ति जब शान्त और सुख में रहते हैं तब बड़े सच्चे और विनयी व्यवहार करते हैं।

पाद-स्थल में चिन्ह रहने से मनुष्य भाव शून्य और मूर्ख होता है। ये लोग प्रायः सभी कार्यों में शैथिल्य प्रदर्शित करते हैं।

मनुष्य के करतल में एक मुद्रा हो तो राजा, दो हों तो धनी और तीन हों तो वह रोगी और बहु सन्तानवान होता है।

गुल्फ़ स्थल में चिन्ह रहने से पुरुष स्त्री के समान स्वभाव विशिष्ट और साज-श्रृंगार प्रिय होता है। स्त्री के यदि ऐसा चिन्ह हो तो वह स्त्री कर्मिष्ठा और सद्गृहिणी होती है।

शरीर के किसी स्थान में यदि चक्र विषम, निम्न अथवा अस्थि-संलग्न हो तो मनुष्य दरिद्र होता है। उन्नत होने से मनुष्य भोग विशिष्ट और स्थूल होने से अर्थ विशिष्ट होता है।

पुरुष के नख में पुष्पके समान चिन्ह दिखाई होने से वह व्यक्ति दुःख भोगी होता है। यदि स्त्री के नख में इस प्रकार का श्वेत वर्ण चिन्ह दिखाई दे तो वह अवश्य ही स्वेच्छाचारिणी और कुलटा होती है।

हृदय में तिलांक होने से स्त्री सौभाग्यवती होती है। वाम कपाल में यदि किसी प्रकार का मशक दिखाई पड़े तो वह स्त्री आजीवन सुख भागिनी होती है।

दक्षिण स्तन में तिलाङ्क हो और वह लोहित वर्ण हो तो उस स्त्री की चार कन्याएँ, दो अथवा तीन पुत्र होंगे। यदि वाम स्तन में इस प्रकार का कोई तिल अथवा कोई लोहित वर्ण चिन्ह हो तो स्त्री एक पुत्र को जन्म देकर विधवा होगी।

गुह्य देश के दक्षिण पार्श्व में तिल होने से स्त्री राज-

पत्नी और राज माता होती है।

नासिका के अग्रभाग में मशक दिखाई देने से अगर वह स्वर्ण हो तो नारी भाग्यवती, और यदि कृष्ण वर्ण हो तो वह नारी विधवा होगी।

नाभि के निम्नतल में तिलादि होने से स्त्री सौभाग्य शालिनी और यही चिन्ह यदि गुल्फ़ में हो तो हत भागिनी होती है।

जड्‌कु, मशक और तिल इन तीनों में से एक चिन्ह यदि वाम कर्ण, वाम कपाल अथवा वाम कण्ठ में दिखाई पड़ें तो स्त्री प्रथम वार पुत्र प्रसव करेगी।

वाम कुक्ष में माष चिन्ह रहने से स्त्री सुलक्षण होती हैं।

पार्श्व भाग में सुदीर्घ और सुन्दर तिलक होने से स्त्री पति-प्रिया और पोत्रवती होती है।

कन्या के वाम कपाल में, वाम हस्त में, वाम कर्ण में, अथवा गल-देश अथवा अधरोष्ठ के वाम भाग में यदि माष के समान तिल हो तो वह कन्या अति सुलक्षणा होती है।

कण्ठस्थल में दक्षिणावर्त चिन्ह हो तो स्त्री विधवा और दुख भागिनी होती है।

कटि प्रदेश में आवर्त्त चिन्ह हो तो स्त्री व्यभिचारिणी, नाभिके समीप हो तो पेतिव्रता एवं पृष्ठ पर हो तो पति-घातिनी और विलासिनी होती है।

हाथ में दक्षिणावर्त चिन्ह हो तो नारी कुलक्षण और

वामावर्त चिन्ह हो तो सुलक्षण होती है। नारी की नाभि, कर्ण अथवा वक्षस्थल में दक्षिणावर्त चिन्ह हो तो वह स्त्री अतिशय शुभ फलदायिनी होती है।

नारी के पृष्ठ पर, दक्षिण भाग में, मध्यभाग में यदि दक्षिणावर्त हो तो वह स्त्री महा सौभाग्यवती होती है। योनि के ऊपर की ओर दक्षिणावर्त चिन्ह हो तो वह कन्या लक्ष्मी स्वरूपिणी होती है।

जिसके ऊपर से पृष्ठ पर्यन्त दक्षिणावर्त्त रेखा होती है वह कन्या अशुभ भागिनी और व्यभिचारिणी होती है। यदि यही रेखा गुह्य से कटि पर्यन्त हो तो नारी पति पुत्र घातिनी और चिर दुख भागिनी होती है।

ललाट तथा सीमान्त में दक्षिणावर्त हो अथवा गर्दन के मध्यभाग में वह दिखाई पड़े तो वह कन्या साल भरके भीतर विधवा हो जायगी। यदि मूर्द्धास्थल के वाम भाग में एक वामवर्त अथवा मूर्द्धा के किसी स्थान में एक या दो वाम अथवा दक्षिणावर्त चिन्ह हों तो दश वर्ष के भीतर वह कन्या पति विनाश करके चिरकाल तक वैधव्य भोगेगी।

मनुष्य के मुख-मण्डल के यदि किसी स्थान में तिल होता है तो दूसरे अङ्ग में भी किसी विशेष निर्दिष्ट स्थानपर उसी के अनुरूप एक तिल होता है। यदि इस प्रकार का तिल दूसरे अङ्ग में दिखाई दे तो मनुष्यके जीवन में किस प्रकार की घटनाएँ घटेंगी उसके सहज बोध के लिये एक संक्षिप्त और क्रमबद्ध अनुक्रमणिका प्रस्तुतकी जाती है। जिज्ञासु पाठक ध्यान पूर्वक पढ़नेसे सारी बातें स्पष्टतया जान सकेंगे।

(१) अनुरूप तिलांकका अवस्थित-स्थान-वक्षस्थल का दक्षिण भाग । तिलाङ्क जनित फल--कृषि तथा स्थापत्य विद्या में पारङ्गत तथा भाग्यमान । यदि तिल मधु के समान अथवा रक्तवर्ण हो तो चिरजीवन सुख में बीतेगा । यदि कृष्ण वर्ण हो तो मनुष्य वंशमें श्रेष्ठ पुरुष होगा । स्त्री हो तो भाग्य-वती होगा । अधिष्ठाता ग्रह-शुक्र बुध और मङ्गल ।

(२)अनरूप तिलाङ्क-दक्षिणाङ्ग । विवाहसे भाग्यवान, दीर्घजीवी, सम्भ्रम और सम्पत्ति । मधुवर्ण हो तो श्रम से भाग्यवान, रक्तवर्ण हो तो किसी महात्मा पुरुष द्वारा भाग्य-वान, कृष्णवर्ण हो तो अमितव्ययी । स्त्री हो तो सुलक्षणा, मसूरवत् हो तो स्त्री अथवा पुरुष भाग्य विशिष्ट होगा । अधि-ष्ठाता ग्रह-शुक्र और मङ्गल ।

(३)दक्षिणवाहु-मध्यमा अवस्था विशिष्ट। मधुवर्ण हो तो चौपाये जीवों से भाग्यवान्; रक्तवर्ण हो तो व्यसन, सङ्गीत आदिक वृत्ति अवलम्बी; कृष्णवर्ण होने से किसी उच्च पद से पतित होने की आशंका एवं मसूरवत् होने से व्यव-सायी । स्त्रीके हो तो पतिकी सौभाग्य दायिनी होती है ।

(४) पृष्ठ—भाग्यवान्, धनशाली और समादरणीय । मधुवर्ण होनेसे भूस्वामी, रक्तवर्ण होनेसे सम्भ्रान्त और मान्य; कृष्णवर्ण होने से आशाभङ्ग, अपूर्ण मनोरथ और दरिद्र होता है । यदि ये भाग्यवान् हों तो अपनी क्षमता से नहीं । स्त्री हो तो सुलक्षणा; कृष्णवर्ण हो तो पति परायण होती है । अधि-ष्ठाता ग्रह-वृहस्पति और मङ्गल ।

(५) दक्षिण-उदर—आत्मीय-बन्धु-अर्थ-विशिष्ट ।

मधुवर्ण होने से कामिनी वल्लभ, कृष्णवर्ण होने से जितेन्द्रिय और मसूरवत् होनेसे उच्चपद विशिष्ट होता है। स्त्रियोंको होने से अल्पायु और भाग्यवती एवं कृष्णवर्ण होने से शत्रु वेष्टिता और शान्त प्रकृति। अधिष्ठाताग्रह–शनि और शुक्र।

(६)दक्षिण वक्षस्थल–सुबुद्धि, श्रमशील एवं बुद्धिबल द्वारा धनवान्, धूम्रवर्ण होने से वाणिज्य में महा सौभाग्य सम्पन्न, रक्तवर्ण होने से विद्या बल से भाग्यवान्, कृष्णवर्ण होने से सच्चरित्र और मधुवत् होने से सकल कार्यों में सिद्ध मनोरथ होता है। स्त्री के होने से वह सुलक्षण और दीर्घ जीवी होती है। यदि कृष्णवर्ण हो तो मिथ्या कलंक भागिनी होती है। अधिष्ठाता ग्रह–बुध और बृहस्पति।

(७)दक्षिण उदर—अध्यवसाय, वाणिज्य तथा क्रय-विक्रय कार्यमें भाग्य और भ्रमण कार्य में धनागम होता है। मधुवर्ण होने से दूर यात्रा में सिद्धि–लाभ, कृष्णवर्ण होने से सर्वत्र प्रताड़ित और मसूरवत होने से विवाह तथा उसी से भाग्य वृद्धिहो। स्त्रियोंके लिए यह चिन्ह शुभ, मधुवर्ण होने से बहुत दूर विवाह हो, समवर्ण होने से धन धान्य वर्द्धिनी, कृष्णवर्ण होने से प्रोषित भार्या या पति विरहिणी एवं मसूर-वत होने से पति–सहित विदेश वासिनी हो। अधिष्ठाताग्रह–बृहस्पति और मङ्गल।

(८)वामपृष्ठ—दीर्घाकार होनेसे कारावास। मधुवर्ण होनेसे शत्रुसे सामान्य अपराधके कारण दण्डित, रक्तवर्ण होनेसे थोड़े समयमें कारामुक्ति, कृष्णवर्ण होनेसे कारावासमें मृत्यु और मसूरवत होने से दुर्भाग्य का किञ्चित ह्रास हो।

स्त्री के यह चिन्ह हो तो वह पर गृहवासिनी, कृष्णवर्ण होने से दुःख भागिनी और द्विचारिणी हो। अधिष्ठाता ग्रह-बृहस्पति और बुध।

(९)वामजठर—भोग विलासी और धन सम्पत्ति नाशक। मधुवर्ण होने से विनीत, रक्तवर्ण होने से दुरवस्था विशिष्ट और अश्लील वादी, मसूरवत् होने से मध्यविधि अवस्था और प्रकृति विशिष्ट हो। स्त्रीके यह चिन्ह हो तो वह सौभाग्य दायिनी, लज्जाहीना और असती हो। अधिष्ठाता ग्रह-शुक्र और मंगल।

(१०)वामबाहु—कठोर प्रकृति, अकारण क्रोधी और हत्यारा, मधुवर्ण होनेसे हत्यापराधमें मुक्ति लाभ;रक्तवर्ण होने से नारीके लिये विपत्ति ग्रस्त और कृष्णवर्ण होनेसे विश्वास-घात के कारण दण्डित हो। स्त्री मुखरा और कटु भाषिणी हो। अधिष्ठाता ग्रह—शनि।

(११)वामवक्ष—कष्ट भोगी और गुरु व्यक्तियों द्वारा उपेक्षित। मधु वर्ण होने से वृथा कार्यकारी, रक्तवर्ण होने से दारिद्र दग्ध, कृष्ण वर्ण होने से उग्र प्रकृति, असावधान और दुर्दम्य और उच्च होने से कचित ही दुर्भाग्य प्रशमित होता है। स्त्री-धनहीना और हतभागिनी, कृष्णवर्ण होने से अति सुलक्षण हो। अधिष्ठाता ग्रह-चन्द्र और मङ्गल।

(१२) वाम स्कन्ध—मनःपीड़ा, दुःख और दुश्चिन्ता। मधुवर्ण होने से मित्र द्वारा पीड़ित; कृष्णवर्ण होने से नारी द्वारा दुर्भाग्य ग्रस्त, और उच्च होने से दुर्भाग्य दूर होता है। स्त्री जातिको होनेसे वह अत्यन्त चंचल और कृष्ण-

वर्ण होनेसे यौवन में वेश्या, बुढ़ापे में कुटनी और दुर्भाग्यनी होती है। अधिष्ठाता ग्रह—चन्द्र और मङ्गल।

(१३) वामपार्श्व—राजदण्ड, विषाद, अपमान और शत्रुता। मधुवर्ण होने से इस के विपरीत फल होता है। रक्तवर्णसे अपनेही दोष और कृष्णवर्ण होनेसे मनुष्य प्रताड़ित होता है। मसूरवत् होने से यत्न और अध्यवसाय से दुर्भाग्य दूर हो। स्त्री के यह चिन्ह हो तो वह बहुभाषिणी और विलासिनी होती है। अधिष्ठाता ग्रह—मङ्गल और बुध।

(१४) वाम नाभि—विविध भोग। मधुवर्ण होनेसे शूलरोग, रक्तवर्ण होने से दूषित रक्तजात रोग और कृष्णवर्ण होनेसे दुख और कष्ट जनित रोग, अल्प जीवन, बहु भ्रमण और कुभार्या मिले। स्त्री के हो तो पेट की पीड़ा, कृष्णवर्ण होने से प्रसव-सङ्कट और उच्च होने से सकल दुर्भाग्य दूर हो। अधिष्ठाता ग्रह—मङ्गल और बुध।

(१५) मध्य जठर—विलासिता और नारी द्वारा दुर्भाग्य। कृष्णवर्ण होने से उसका आधिक्य और मसूरवत् तथा समवर्ण होने से, अतीव भयङ्कर होता है। मसूरवत् और उच्च होने से नारी वल्लभ हो। स्त्री के होने से कुलक्षय हो। अधिष्ठाता ग्रह—बृहस्पति और मङ्गल।

(१६) मध्यवक्षस्थल—बर्बर और निष्ठुर प्रकृति, अस्थिर मस्तिष्क, अकार्यकारी और रूक्षभाषी हो। मधुवर्ण होने से लोकप्रिय और समवर्ण होनेसे क्रोधी, कृष्णवर्ण से अकृतकर्मा उच्च तथा वृहत होने से सौभाग्यप्रद हो। स्त्री के हो तो आलस्यप्रिया और बुद्धि हीना और कृष्ण वर्ण होने से म्लेच्छ

चारिणी हो । अधिष्ठाता ग्रह—मङ्गल और बुध ।

(१७) वाम उदर-विभिन्न फल । मधुवर्ण होनेसे सौभाग्य और सद्गुण । रक्तवर्ण होनेसे नर घातक, और जक्रपत होनेसे ज्ञान और धार्मिक हो । स्त्रियों के हो तो वह कुलक्षण और कृष्णवर्ण होनेसे नर घातिनी । अधिष्ठाता ग्रह-वृहस्पति और मङ्गल ।

(१८) मध्य उदर-वाक् पटुता, सम्भ्रम, विलासिता और बहु भोजन । स्त्रीके हो तो मदनोन्माद और व्यभिचार । अधिष्ठाता ग्रह—शुक्र और शनि ।

(१६) मध्य वक्षस्थल-बहु विपत्ति, पीतवर्ण होनेसे कारावास, अर्श तथा वसन्त प्रभृति रोग, रक्तवर्णसे रक्त-रोग, कृष्णवर्ण से दन्त और गुहय रोग, और मसूरवत् होने से इन रोगों से विमुक्ति । स्त्री के होने से अर्श और गुहय रोग, कृष्णवर्ण होने से इन्हीं रोगों का आधिक्य ।

(२०) वक्षस्थल-बहुविपद्व और दुःख । मधुवर्ण होने से किञ्चित् क्षमता, रक्तवर्ण होने से साहाय्य और सहानुभूति प्राप्ति, कृष्णवर्ण से सर्वदा अभाव एवं मसूरवत् होने से निपुण बुद्धि और श्रमक्षम । स्त्री के होने से अलक्षण और कृष्णवर्ण होने से अपघात से पिता की मृत्यु । अधिष्ठाता ग्रह—मङ्गल और बुध ।

(२१) गुहय देश—पापासक्ति और बहु विपत्ति । कृष्णवर्ण से विलास वासना जनित बहु अपकार और राजदण्ड । मधु याकृष्णवर्णसे शुभ और मसूरवत् होनेसे किंचित् हित । स्त्रियोंके होनेसे कुलक्षण । अधिष्ठाता ग्रह—बुध ।

(२२) दक्षिण जंघा—कृषिकार्य में सौभाग्य एवं स्थविर तथा प्रकृति व्यक्तिसे सम्पति लाभ। मधुवर्णसे यौवन में धनशाली, रक्तवर्ण होनेसे आजीवन सौभाग्यवान; कृष्णवर्ण से आय की अपेक्षा व्यय अधिक, एवं मसूरवत् होने से विपुल विषयों में समादर। स्त्री के होने से सुलक्षण एवं विपुल संचय। अधिष्ठाता ग्रह—शुक्र और बुध।

(२३) (मतान्तर)—आकस्मिक असम्भावित वित्त प्राप्ति और विपुल सम्पत्ति। मधुवर्ण तथा मसूराकार होने से समधित सौभाग्यवान और कृष्णवर्ण होने से अति दुर्भाग्य। स्त्री जाति के लिए शुभ आत्मीय आदिकों से बहुधन प्राप्ति। अधिष्ठाता ग्रह—मङ्गल और बृहस्पति।

(२४) दक्षिण बाहु—व्यसन और पशु पालनसे सौभाग्य, मधुवर्ण तथा मसूरवत् होने से अधिकतर शुभ एवं असम्भावित सम्पति लाभ। स्त्री के होने से सुलक्षण, पिता माता से सहायता। अधिष्ठाता ग्रह—शनि और शुक्र।

(२५) दक्षिण गुह्य-सौभाग्य, सम्पति एवं सम्भ्रान्त पद कृष्णवर्णसे क्षति और शेषमें शुभ। स्त्रीके हो तो सुलक्षण, कृष्णवर्णसे मुखरा। अधिष्ठाता ग्रह-बृहस्पति और मङ्गल।

(२६) वक्षस्थल-नारी तथा मित्रों से सौभाग्य। मधु अथवा रक्तवर्णसे विवाह मूलक भाग्य, मसूरवत् होनेसे मित्रकी सहायता से उपार्जन एवं कृष्णवर्ण होने से कष्टसे सिद्धि। स्त्रियों के लिए शुभ। अधिष्ठाता ग्रह—शनि और शुक्र।

(२७) दक्षिण वक्षस्थल का दक्षिण भाग—प्रवाससे सुन्न सनाम, धन, सम्भ्रम और देश श्रेष्ठ-ख्याति। मधुवर्णसे

बहुत श्रम और अध्यवसाय, रक्तवर्ण से सामान्य धन, कृष्ण-वर्ण से असार बासना और मसूरवत् होने से पूर्ण सैभाग्य। स्त्री जाति के लिए सुलक्षण तथा किंचित मुखरा। अधिष्ठाता ग्रह—बुध और बृहस्पति।

(२८) दक्षिण नाभि-दूर भ्रमण, प्रवास और भाग्य। मधुवर्ण होनेसे वनिताजनित भाग्य, रक्तवर्णसे आत्मीयसे अर्थ प्राप्ति, कृष्णवर्ण से अति दारिद्र और मसूरवत् होने से अर्थ और सम्पत्ति, स्त्री के लिए सुलक्षण, पति के लिए शुभ और धन प्राप्ति, कृष्णवर्ण से अस्थिर भाग्य और मसूरवत् होने से अति शुभ। अधिष्ठाता ग्रह—बृहस्पति और मङ्गल।

(२९) वाम पृष्ठ—आत्म दोष जनित दुख, दारिद्र और ताप; मधुवर्ण तथा कृष्ण वर्ण से दुर्भाग्य का किंचित् ह्रास; कृष्णवर्ण से अति दुख और कारावास; चणक तुल्य होनेसे अधिकांश क्षमता और शान्तिलाभ। स्त्रीके लिए अशुभ। अधिष्ठाता ग्रह—शनि, बृहस्पति और बुध।

(३०) निम्न वाम वक्ष—दुर्भाग्य जीवन, अमित व्यय और संचित धन विनाश। मधु अथवा रक्तवर्ण होनेसे बहु भोगी। कृष्णवर्णसे मस्तिष्क विकार; मसूरवत् होनेसे विलास वृत्ति और लम्पटता। स्त्री के लिए कुलक्षण। अधिष्ठाता ग्रह—मङ्गल और बृहस्पति।

(३१) वाम पृष्ठ—अभियोग लिप्सा, विवाद विसम्वाद और स्त्रीसे विपत्ति, मधुवर्ण से विलास जनित दुर्भाग्य, कृष्णवर्ण से आत्म दोष से विषय क्षय, एवं मसूरवत् होने से सामर्थ्य और साहस। स्त्री के लिये महा असच्चरित्र और

कुगृह्णी होती है। अधिष्ठाता ग्रह--शुक्र और मङ्गल।

(३२) वाम स्कन्ध--कारावास का भय और मित्र से शत्रुता, मधुवर्णसे अपव्यय, अमित व्ययी और सम्पत्ति नाश, रक्तवर्ण, अधःपतन और दारिद्र; कृष्णवर्णसे गुरुजनोंकी कोप दृष्टि, मसूरवत होनेसे यौवनमें विपुल वित्त और बुढ़ापे में धनहीनता। स्त्री के हों तो, कुलक्षण, मनस्ताप और यन्त्रण, कृष्णवर्ण से हत भागनी। अधिष्ठाता ग्रह शनि और मङ्गल।

(३३) वाम उदर—बाधा विपत्ति, कष्ट, मधुवर्ण होने से उदरव्यथा, समवर्ण होने से पान खाने से रोग, कृष्णवर्ण होनेसे वीर्यका व्यर्थ रोग और संचय जनित व्याधि एवं मसूरवत् होने से विपुल सामर्थ्य, प्रबल रति शक्ति और पुत्र लाभ। स्त्री के लिये कुलक्षण अधिष्ठाता ग्रह—मङ्गल।

(३४) वामपार्श्व—हिंसा, द्वेष, मात्सर्य और दुष्टावस्था। मधुवर्ण होनेसे मित्र द्वारा अपमान, कृष्णवर्ण होने से आत्मापराध जनित संकट और मसूरवत् होने से दुर्भाग्य। स्त्री के हो तो कुलक्षण,। अधिष्ठाता ग्रह—शनि और बुध।

(३५) वामनाभि—नरहत्या और देशान्तर पलायन। मधुवर्ण तथा रक्तवर्ण होनेसे जाति तथा आत्मीय द्वारा विपद्, कृष्णवर्ण से जल मार्ग द्वारा विपद्। स्त्री के हो तो अलक्षण, अल्पायु, और कुस्वामी, कृष्णवर्ण से शत्रु भय। अधिष्ठाता ग्रह-मङ्गल।

(३६) दक्षिण उदर-स्वास्थ्य सुख, दीर्घ जीवन और सौभाग्य। मधुवर्ण तथा रक्तवर्ण होने से अध्ययन शीलता और भावना शक्ति। कृष्णवर्ण होने से मध्यविध धन एवं

मसूरवत् होने से सौभाग्य वृद्धि । स्त्री के लिए सुलक्षण, पति सौभाग्य एवं सद्ग्रहणी, कृष्णवर्ण से पतिकी स्वास्थ्य हानि अधिष्ठाता ग्रह—ब्रहस्पति और शुक्र ।

(३७)दक्षिणाङ्ग-विपल वित्त और सम्प्रान्त पद । मधुवर्ण से सहज सिद्धि, रक्तवर्ण से निधिलाभ, और परस्वप्राप्ति, कृष्णवर्ण से मध्यविधि धन, मसूरवत् होने से सद्गुण और और ज्ञान । स्त्री के लिये अति सुलक्षण । अधिष्ठाताग्रह-ब्रहस्पति और मङ्गल ।

(३९)दक्षिण पार्श्व-निपुणता, अविहित श्रम, बहुधन और दीर्घायु । मधु और रक्तवर्णसे सौभाग्य युक्त, कृष्णवर्णसे किंचित क्षति एवं मसूरवत होने से महा सौभाग्य और जय । स्त्री के हो तो सुलक्षण, कृष्णवर्ण से आपेक्षिक क्षति । अधिष्ठाता ग्रह—ब्रहस्पति और बुध ।

(४०)दक्षिण जानु (घुटनोंके नीचेका भाग)--दैव शक्ति प्रतिभा एवं बहुधन । मधुवर्ण से महासौभाग्य; रक्तवर्ण होने से उच्चवंश से पत्नी लाभ, कृष्णवर्ण से दाम्पत्य कलह एवं मसूरवत होने से सर्वत्र महोन्नति एवं महाधन । स्त्री के हो तो सुलक्षण और अस्थिर सौभाग्य । अधिष्ठाता ग्रह—बुध और ब्रहस्पति ।

(४१)वाम जंघा—जीवन सङ्कट; मधु अथवा रक्तवर्ण होनेसे व्याधि का किंचित ह्रास, कृष्णवर्ण होनेसे किसी ऊँचे स्थान से गिरना, पानी तथा किसी अन्य कारण से अकाल मृत्यु, मसूरवत होनेसे अल्पायु और सुख मृत्यु। स्त्रीके हो तो अलक्षण चिर रोग, कृष्णवर्ण होने महा दुर्भाग्य और अपघात

से मृत्यु अधिष्ठाता ग्रह—शनि और शुक्र ।

(४२) वामाङ्ग—अति नीच व्यवहार और जघन्यावस्था। मधु तथा रक्तवर्ण से अपेक्षाकृत शुभ, कृष्णवर्ण से विलासता और कुष्ठ, अपघात, यक्ष्मा, प्रभृति व्याधि तथा मसूरवत होने से सन्दिग्ध चित्त। स्त्री के लिए महा अशुभ और कुप्रकृति । अधिष्ठाता ग्रह—मङ्गल और चन्द्र ।

(४३)वामांङ्ग—महत रोग और अति दुर्भाग्य । मधु और रक्तवर्ण से चिररोग, कृष्णवर्ण से संक्रामक व्याधि, मसूरवत होने से दीर्घ जीवन । स्त्री के हो तो कुलक्षण । अधिष्ठाता ग्रह—शनि ।

(४४)निम्न वाम-पृष्ठ—दुष्ट प्रकृति; मधुवर्णसे क्रोध, रक्तवर्ण से अति निष्ठुरता, कृष्णवर्ण से चोर, हत्या और समुचित दण्ड भोग, एवं मसूरवत् होने से दुर्भाग्यमें किंचित ह्रास । स्त्री के लिए कुलक्षण, और कृष्णवर्ण से अल्पायु । अधिष्ठाता ग्रह—शनि ।

(४५) वामजंघा-बाधा, विपत्ति और दुख। मधुवर्णतथा रक्तवर्णसे अविमृश्यकारिता, कृष्णवर्ण से अपमृत्यु और मसूरवत् होनेसे अपेक्षाकृत शुभ । स्त्रीके हो तो कुलक्षण; कृष्णवर्ण से अपघात से मृत्यु । अधिष्ठाता ग्रह—मङ्गल और चन्द्र ।

(४६)दक्षिण: उदर—जीवन संकट विपत्ति और मस्तक में चोट का भय, मधुवर्ण और रक्तवर्ण से विपद और मुक्ति, कृष्णवर्ण से कार्य-क्षति, वित्त नाश, सांघातिक आघात और मसूरवत होने से इसी प्रकार की क्षति । स्त्री के लिये अति कुलक्षण, आदर की वस्तु—नाश और कृष्णवर्ण होने से

मस्तक पर अपने हाथ से प्रस्तराघात । अधिष्ठाता ग्रह—मङ्गल ।

(४७) दक्षिणाङ्ग—शत्रु भय और मानहानि, रक्तवर्ण से आपेक्षिक वृद्धि, कृष्णवर्ण से दक्षिणाङ्ग में अग्निभय एवं मसूरवत होने से मध्यविध भाग्य । स्त्री के होतो अति कुलक्षण । अधिष्ठाता ग्रह—शनि और मङ्गल ।

(४८) निम्नदक्षिणाङ्ग—दुर्भाग्य और दैन्य । यह जिस रङ्ग का क्यों न हो अशुभ होता है । स्त्री के लिये तो और भी खराब होता है । अधिष्ठाता ग्रह-मङ्गल ।

(४९) वामउदर—शत्रु भय, राजदण्ड और दुर्भाग्य, मधु व रक्तवर्ण से प्रबल शत्रु और कृष्णवर्ण से अपघात से मृत्यु शंका । स्त्री के लिये कुलक्षण । अधिष्टाता ग्रह-शनि और मंगल ।

(५०) निम्न वामाङ्ग—जघन्य आकार, कुत्सित व्यवहार और अति नीच प्रकृति । रक्तवर्ण से तस्कर वृत्ति, रक्तवर्ण से नर हत्या और मसूरवत होने से घोर विलासिता । स्त्री के लिए कुलक्षण, मृत्यु भय और कृष्णवर्ण से अपमान से मृत्यु । अधिष्ठाता ग्रह-मंगल और बुध ।

मतान्तर—वैषम्य प्रियता और विवादानुरक्ति; मधुवर्ण होने से आपेक्षिक शमन, रक्तवर्ण से अति क्रोध, कृष्णवर्ण से हत्यापराध और मसूरवत होने से क्वचित् अपमृत्यु । स्त्री के लिये महा अशुभ-विषभय और अपघात मृत्यु । अधिष्ठाता ग्रह-शनि और मङ्गल ।

(५१) दक्षिण गुह्य-विवाह जनित सौभाग्य, मधुवर्ण से सौभाग्य और धन । कृष्णवर्ण होने से उत्कण्ठा और मसूरवत् होने से असम्भावित सम्पत्ति लाभ । स्त्री के लिए अतिसुलक्षण । अधिष्ठाता ग्रह-शुक्र और बुध ।

(५२) मध्य अङ्ग-गर्व क्षिप्रकारता, रुक्ष और क्रोधी । चाहे जिस वर्ण का हो स्वभाव दोष अवश्य होगा । स्त्री के लिये कुलक्षण होता और स्त्री की प्रकृति भी ऐसी ही होती है । अधिष्ठाता ग्रह-मङ्गल और बुध ।

(५३) गुह्यदेश—व्यापक, संकट और बहुरोग, मधुवर्ण से गुह्यपीड़ा, रक्तवर्ण से सिर पीड़ा; कृष्णवर्ण से दन्त और गुह्यरोग, मसूरवत् होने से चित्त में उद्वेग; तीव्र भाषा और अद्भुत कौशल, स्त्री के लिए स्वास्थ्य क्षय, स्त्रीरोग, और आत्म दोष जनित मृत्यु । अधिष्ठाता ग्रह—शनि ।

(५४) वामगुह्य—नर हत्या, मधु तथा रक्तवर्ण से आपेक्षिक शमन, कृष्णवर्ण से स्वजन । हत्या एवं मसूरवत् होने से मस्तिष्क विकार और उन्मत्तता । स्त्री जाति के लिए—प्रवृत्ति कुलक्षण । अधिष्ठाता ग्रह—शुक्र और मंगल ।

(५५) दक्षिण गुह्य—अपयश और व्यभिचार । मधुवर्ण होने से स्त्री द्वारा दुर्भाग्य और मसूरवत् होने से अपेक्षाकृत शमन और शुभ । स्त्री के हो तो कुलक्षण और वेश्या वृत्ति । अधिष्ठाता ग्रह—शनि और शुक्र ।

(५६) वस्तिका निम्नतल—विलास वासना और अश्लील प्रकृति, रक्तवर्ण से बहुरोग, कृष्णवर्ण से नवनिध रोग और हानि; मसूरवत् होने से दुर्बलता और असमर्थता,

स्त्री के लिए अति कुलक्षण और इसी प्रकार की प्रकृति। अधिष्ठाता ग्रह--शुक्र ।

(५७) दक्षिण उदर--सौभाग्य और सम्पद, मधुवर्ण से यौवन में सौख्य, रक्तवर्ण से आजीवन सौभाग्य, कृष्णवर्ण से आपेक्षिक क्षति और मसूरवत् होने से बुढ़ापे में महा सौख्य। स्त्री के लिए सुलक्षण। अधिष्ठाता ग्रह--बृहस्पति और मङ्गल।

(५८) दक्षिण नाभि-- स्त्री से सौभाग्य, मधुवर्ण से दान, सम्पत्ति, रक्तवर्ण से उत्ताधिकार, कृष्णवर्ण से विषय लाभ और मसूरवत होने से सौभाग्य वर्द्धन। स्त्री के लिये सुलक्षण। अधिष्ठाता ग्रह--बृहस्पति और शुक्र ।

(५९) द्वारा वाम उदर--लम्पटता से कष्ट, दुर्भाग्य और राजदण्ड, मधुवर्ण से सामान्य स्त्री, रक्तवर्ण से महत्-वंशीय स्त्री द्वारा और कृष्णवर्ण से अति जघन्य स्त्री द्वारा अथवा किसी अस्वाभाविक अश्लीलता द्वारा और मसूरवत् होने से आत्मकृत दुर्भाग्य। स्त्री के लिए कुलक्षण और इसी प्रकार की प्रकृति। अधिष्ठाता ग्रह--शनि और शुक्र ।

(६०)वामांग—विवाह जनित दुर्भाग्य;मधुवर्णसे दैन्य, रक्तवर्ण से अपयश, कृष्णवर्ण से अशान्ति और मसूरवत् होने से सम्पत्ति विनाश। स्त्री जाति के कुलक्षण कृष्णवर्ण से पुंश्चली और वेश्या वृत्ति। अधिष्ठाता ग्रह—शनि और मङ्गल।

मतान्तर--भाग्योन्नति। चाहे जिस रंग का हो शुभ। स्त्री जाति के लिए सुलक्षण। पति के लिए शुभ।

अधिष्ठाता ग्रह—बृहस्पति और शनि ।

मतान्तर—विलासवृत्ति; मधुवर्ण तथा रक्तवर्ण से आपेक्षिक शमन, कृष्णवर्ण से अत्यन्त जघन्य नीचावस्था एवं उच्च होने से अश्लील और स्वाभाविक विलास । स्त्री जाति के लिये कुलक्षण । कृष्णवर्ण से कुल कलंकिनी । अधिष्ठाता ग्रह—शनि और बुध ।

(६१) दक्षिणाङ्ग—सौभाग्य; मधु अथवा रक्तवर्ण से विपुल वित्तलाभ, कृष्णवर्ण से बाधा विपत्ति, अति दुर्भाग्य और मुक्ति एवं मसूरवत् होने से असम्भावित और अचिन्त्य पूर्व सम्पत्ति लाभ । स्त्री जाति के लिए सुलक्षण, कृष्णवर्ण से कुलक्षण अधिष्ठाताग्रह—बुध बृहस्पति ।

मतान्तर—विपुल वित्त और सम्भ्रम, कृष्णवर्ण से आपेक्षिक क्षति एवं मसूरवत् होने से परस्व प्राप्ति । स्त्री जाति के लिए सुलक्षण । कृष्णवर्ण से कुलक्षण । अधिष्ठाता ग्रह—शुक्र और बुध ।

(६२) वामगुह्य—विरक्ति और यन्त्रणा । मधु अथवा कृष्णवर्ण से उग्र प्रकृति जात यन्त्रण । कृष्णवर्ण से अपमृत्यु एवं मसूरवत् होने से चिरयन्त्रणा भोग । स्त्री जाति के लिए अत्यन्त शुभ । अधिष्ठाता ग्रह—शनि और बुध ।

(६३) वाम जंघा—अश्लील इन्द्रिय दोष, मधुवर्ण से अतिरिक्त रति और सामर्थ्य, रक्तवर्ण से अतिरंक, कृष्णवर्ण शिल्प परायणता जनित दण्डभोग और मसूरवत् होने से नारी के कूट चक्र से महाक्षति । स्त्री जाति के कुलक्षण । कृष्णवर्ण से आत्म हत्या । अधिष्ठाता ग्रह—शनि और शुक्र ।

(६४) दक्षिण पार्श्व—क्रोध और निष्ठुरता; मधुवर्ण से आपेक्षिक शमन, रक्तवर्ण से प्रति हिंसा लिप्सा, कृष्ण वर्ण से नर हत्या अथवा उसका हेतु और मसूरवत् होने से असम-साह सिकता । स्त्री जाति के लिए महा अलक्षण । कृष्णवर्ण से जीवन-सङ्कट । अधिष्ठाता ग्रह—मङ्गल ।

(६५) गुह्यदेश-अल्पायु, मधुवर्ण से बहु भोजन, कुपथ्य और चरित्र दोष से आयु क्षय, रक्तवर्ण से भ्रमण और परिवर्तन । कृष्णवर्ण से विष से विनाश । मसूरवत् होने से अमिताचार से अपमृत्यु । स्त्री जाति के लिए अति कुलक्षण एवं प्रसव सङ्कट । कृष्णवर्ण होने से अल्पायु और विष द्वारा अपमृत्यु । अधिष्ठाता ग्रह—शनि ।

(६६) वामाङ्ग—विवाद, विपद् और जीवन-सङ्कट । मधु और कृष्णवर्ण से सम्पत्ति जनित विपत्ति, कृष्णवर्ण से इसी प्रकार के दुख से प्राणात्याग और उच्च होने से किंचित् शमन । स्त्री जाति के लिए कुलक्षण, कृष्णवर्ण से द्विचारिणी भाव एवं अकाल मृत्यु भय । अधिष्ठाता ग्रह—शनि और मङ्गल ।

(६७) गुह्यदेश—मधुवर्ण से प्रति विपत्ति सेनाकाल मुक्ति, कृष्णवर्ण से आरोपित विपत्ति, कृष्णवर्ण से विपत्ति के साथ गुह्य पीड़ा एवं मसूरवत् होने से सङ्कट-शमन और मुक्ति लाभ । स्त्री जाति के लिए कुलक्षण और तदनुकूल प्रकृति । अधिष्ठाता ग्रह—मङ्गल ।

(६८) घुटना—बहुदेश भ्रमण, मधुवर्ण से भ्रमण द्वारा भाग्य और धन, रक्तवर्ण होने से धन-नाश, कृष्णवर्ण होने

से विश्वासद्रोह और असत् प्रकृति, मसूरवत् होने से सुख-सम्पत्ति भोग। स्त्री जाति के लिए कुलक्षण, कुगृहिणी और कृष्णवर्ण से असती। अधिष्ठाता ग्रह—मङ्गल और बुध।

(६६) पाददेश—सन्तान लाभ। मधु अथवा रक्तवर्ण से भाग्य और भोग। कृष्ण वर्ण से नीच वृत्ति, मसूरवत् होने से तीक्ष्ण बुद्धि और प्रतिभा। स्त्री जाति के लिए कुलक्षण और इसी प्रकार की प्रकृति। अधिकांश दुष्ट सन्तान और इनके द्वारा दुख अधिष्ठाता ग्रह–बृहस्पति और मंगल।

मतान्तर—अशान्ति, बर्बरता और कलह लिप्सा। मधुवर्ण से साहस, सामर्थ्य, रक्तवर्ण से अत्युग्र स्वभाव, कृष्णवर्ण से नर हत्या और मसूरवत् होने से अकारण आततायीपन। स्त्री जाति के लिए कुलक्षण और इसी प्रकार की प्रकृति। अधिष्ठाता ग्रह—मङ्गल।

(७०) दक्षिण नितम्ब—शिल्प प्रतिभा, अध्यवसाय और ख्याति। मधुवर्ण से परधन लाभ, रक्तवर्ण से सुख सौभाग्य, कृष्णवर्ण से निधि ज्ञान एवं मसूरवत् होने से सर्व सुख। स्त्रीजाति के लिए सुलक्षण · कृष्णवर्ण के अतिरिक्त शेष वर्ण सौभाग्य पद और दीर्घायु, कृष्णवर्ण से किञ्चित् क्षति। अधिष्ठाता ग्रह—बृहस्पति और मङ्गल।

(७१) नाभि एवं गुह्य का मध्यभाग—राजदण्ड से फांसी या अपमृत्यु। मधुवर्ण से आपेक्षिक शमन, रक्तवर्ण से शत्रु द्वारा दुर्भाग्य। कृष्णवर्ण से राजदण्ड द्वारा धन-नाश, मसूरवत् होने से जल द्वारा मृत्यु। स्त्री जाति के लिए कुलक्षण, गर्भावस्था में कष्ट और विपत्ति। कृष्णवर्ण से इसी कारण से

मृत्यु । अधिष्ठाता ग्रह—शनि और शुक्र ।

(७२) जंघा—सौभाग्य, सहज सिद्ध, असाधारण सुख । मधुवर्ण से स्थानीय रोग-भोग, रक्तवर्ण से अर्शपीड़ा और आयु हानि, कृष्णवर्ण से अल्पायु और मसूरवत् होने से दुर्भाग्य शमन । स्त्री जाति के लिए कुलक्षण—बस्ति पीड़ा और मातृरेखा, कृष्णवर्ण से गिरने से गर्भ पतन । अधिष्ठाता ग्रह—शनि ।

(७३) नितम्ब—मधुवर्ण से सामान्य आघात । रक्त वर्ण से कई बार गिरना और चोट लगना, कृष्णवर्ण से चोट पहुँचने से जीवन-सङ्कट एवं मसूरवत् होने से सामान्य क्षति कण्ठ और नितम्ब के दोनों तिल समवर्ण और समाकार होने से कुष्ठ व्याधि । स्त्री जाति के लिए कुलक्षण—गिरना और जल में डूबने का भय । अधिष्ठाता ग्रह—शनि और मङ्गल ।

पदाङ्क ।

कराङ्क के समान पदाङ्क भी अनेक प्रकार के होते हैं । बायें पैर में अर्द्धचन्द्र, कलस, त्रिकोण, धन, शून्य, गोष्पद, मत्स्य और शङ्ख । दाँयें पैर में अष्टकोण, स्वस्तिक, छत्र, चक्र, पद, अंकुश, ध्वज, वज्र, जम्बू, ऊर्ध्व रेखा और पद्‌म में ग्यारह चिन्ह होते हैं । बाँयें पैर के आठ और दाँयें पैर के ग्यारह कुल मिलाकर उन्नीस अंक जिसके पैरों में होते हैं, स्वयं कमला उनकी सेवा करती हैं ।

जिस पुरुष के चरणतल में पद्‌म, चक्र, तड़ाग, तोरण, अंकुश अथवा वज्र चिन्ह होता है वह व्यक्ति राजा, व राज

तुल्य क्षमता शाली और महा सौभाग्यवान् होता है।

जिसके पद तल में अंगूठे के पास तक ऊर्ध्व रेखा होती है वह महा सौभाग्यवान और उत्कृष्ट पुरुष होता है—इसमें सन्देह नहीं।

जिसके पदतल में अविच्छिन्न रूप से वज्र रेखा होती है। उसकी उत्पत्ति श्रेष्ठ और उत्कृष्ट वंश में होती है।

जिसके चरण की पर्व रेखा में कोई अन्य रेखा होती है वह महा भाग्यवान होगा।

दोनों पैर उन्नत और प्रकाशित चरणतल पद्मवत् सुन्दर और कोमल, कुछ सफेदी लिए हुए तथा मत्स्य और और मकर चिन्ह से युक्त हों तो लक्षण शुभ होता है।

जिसके पैर कुत्सित, वक्र और बेडौल और अँगुलियां दूर दूर हों तो वह व्यक्ति बड़ा दरिद्र होता है।

जिसके पैरों का रंग पीला और लाल रंग का हो, खञ्जनवत्, विच्छिक, वक्र, और चलते समय ठीक न पड़ते हों तो वह व्यक्ति महा पापी होता है।

पुरुष के चरण यदि वक्र शुष्क और रूक्ष हों, पद पृष्ठ सूर्य के समान हों, नाखून पीले रंग के हों और अँगुलियाँ दूर हों तो यह महा दरिद्रता के लक्षण हैं।

महा भाग्यवान पुरुष के कुछ लक्षण ये हैं:—दोनों पैर कमल के समान सुन्दर, कुछ गरम, ऊपर का भाग मगर की पीठ के समान उन्नत, चरण तल बिना पसीने का, अँगुलियाँ चम्पक के समान मनोहर और मिली हुई, नख तांबे के समान तथा चरणतल बत्तीस पदार्थों में से कुछ चिन्हों द्वारा अंकित

होना भाग्यवान के लक्षण हैं।

स्त्री जाति के चरण तल में यदि वज्र, पद्म अथवा हल के आकार का चिन्ह हो तो वह दासी होकर भी अन्त में राजरानी होती है।

जिसके चरण तल में चक्र, शंख, पद्म, ध्वजा, मत्स्य अथवा छत्र-रेखा हो वह स्त्री राजपत्नी होती है।

पैरों की अँगुलियां कोमल घनी, सुगोल और उन्नत होने से शुभ, अन्यथा भारी अशुभदायिनी होती है।

पैरों की अँगुली बड़ी होने से कुलटा, कृश होने से दरिद्रा, सूखी होने से आयुष्य हीन, वक्र होने से दुर्भाग्नी, चिपटी होने से दासी, विरला होने से दुःख भागिनी और अति संलग्ना होने से दासी और पति घातिनी होती है।

चरणतल में किसी मङ्गल द्रव्य की प्रतिकृति होने से मङ्गल और अशुभ चिन्ह होने से अशुभ होता है।

कपाल—दर्शन।

कपाल मानव की अन्तः प्रकृति का दर्पण है। जिस प्रकार निर्मल और स्वच्छ दर्पण में बहिः प्रकृति—अङ्ग-प्रत्यङ्गादि अविकल रूप से प्रतिभासित होते हैं उसी प्रकार कपाल रूपी दर्पण में, मनुष्य के इस जीवन का सुख दुखादि तथा अन्तः प्रकृति का प्रतिबिम्ब देदीप्यमान् होता है। कपाल की आकृति, गठन, परिमाण और अधिष्ठाता ग्रहों की स्थिति और उनकी रेखाओं की विषमता आदि देखकर

विचक्षण विद्वानों ने ज्ञान चक्षुओं से मनुष्य का अदृष्ट देखकर त्रिकाल का फलाफल व्यक्त किया है।

सकल मनुष्यों की कपाल की आकृति एक प्रकार की नहीं होती। किसी की चौड़ी, क्षुद्र, प्रशस्त, दीर्घ, उच्च, खाई निम्न, और अग्रसर आदि से मनुष्य के कपाल का भेद स्थिर किया जाता है।

कपाल की रेखाएँ स्थूल, सूक्ष्म, उज्ज्वल, मलिन अस्फुट, सरल, वक्र, छिन्न, अविच्छिन्न होने से प्रकृति में भिन्नता रहती है। कपाल के सर्वोच्च स्थान पर, बालों के पास प्रथम रेखा का अधिष्ठाता, बृहस्पति, उसके नीचे, मङ्गल, उसके नीचे सूर्य, उसके नीचे शुक्र, उसके नीचे बुध और सबसे नीचे-सप्तम रेखा का अधिपति चन्द्र रहता है।

कपाल की आकृति और गठन भेद से मानव चरित्र में किस प्रकार का प्रभेद होता है वह संक्षेप में यहाँ लिखा जाता है:—

जिसका कपाल छोटा, कोमल, समान, सामने का भाग केश विहीन अथवा अति अल्प केश युक्त होता है वह मनुष्य चिन्ता युक्त और अवस्था विहीन होता है।

जिसका कपाल स्तूपाकार और कुंचित होता है वह व्यक्ति प्रकृति से ही चाटुकार होता है और सदा अपना स्वार्थ साधन के लिए प्रवञ्चना पूर्ण वाक्यों का प्रयोग करता है। इसकी तुलना कुत्ते जैसे प्राणी से की जाती है।

जिनका कपाल अर्द्धचन्द्र की आकृति के समान असमान वे लोग प्रवञ्चक, प्रताड़क, उच्चाभिलाषी और भयङ्कर

होते हैं। ये लोग मनुष्यों के सामने विनय-नम्र होते हैं। यदि इस प्रकार का कपाल कुंचित हो तो वह व्यक्ति कपट और अति कूट बुद्धि और सर्वदा विरुद्ध प्रकृति होता है। अधिक धन सम्पन्न होने से विषम भाव और बढ़ जाता है।

यदि कपाल सरल, ऊँच नीच, कुछ भी न हो तो वह व्यक्ति मध्यम श्रेणी का होता है। ऐसे व्यक्ति किसी विषय की अधिक चेष्टा नहीं करते।

कपाल निष्प्रभ तथा कृष्णवर्ण हो तो वह व्यक्ति किसी विषय की अधिक चेष्टा नहीं करते।

कपाल निष्प्रभ तथा कृष्णवर्ण हो तो वह व्यक्ति सर्वदा क्रोधी, साहसी और अदूरदर्शी होगा। इनकी तुलना जंगली सुअर और सिंह से होती है।

जिस मनुष्य के कपाल का निम्न भाग मांस पूर्ण दोनों आंखों की ओर झुका या ढला हुआ हो वे प्रतारक, विश्वास घातक, निष्ठुर और बड़े निर्दय होते हैं।

देखने से ही जिन व्यक्तियों का कपाल कर्कश और कठोर जान पड़े उनके अन्तःकरण में एक प्रकार की विजातीय घृणा का उदय होता है। वे निश्चय ही बर्बर प्रकृति होते हैं। इनमें दया नहीं होती। कैसा भी अमानुषिक एवं निष्ठुर कार्य क्यों न हो, जरूरत पड़ने पर वे लोग इसे बड़ी सरलता से कर लेंगे।

जिनका कपाल चपटा और निम्न तल होता है वे स्त्रियों के समान मृदु प्रकृति के होते हैं। इनका प्रेम स्त्री जाति के साथ बहुत देखा जाता है।

कहा जा चुका है कि कपाल के सर्वोच्च भागस्थ केश मूल से लेकर सब से नीचे भाग—नासिका के मूल तक सात ग्रहों की स्थिति है। कभी कभी ग्रह के पार्श्व भाग में कभी अतिरिक्त रेखा दिखाई पड़ती है और कभी कभी अधिष्ठित रेखा भी नहीं दिखाई पड़ती। रेखाओं में से कुछ तो सौभाग्य सूचक और कुछ दुर्भाग्य सूचक होती हैं। जो जो रेखाएँ सरल, चूरी, लम्बी, अविच्छिन्न, अप्रतिहत और नासिका के ओर कुछ झुकी हुई होती हैं वे रेखाएँ सौभाग्य की सूचना देती हैं और जो रेखाएँ कुंचित, वक्र, छिन्न भिन्न अथवा असमान होती हैं। वे दुर्भाग्य की परिचायिका होती हैं।

रेखाएँ यदि सम और सरल हों तो वह व्यक्ति सदात्मा और धार्मिक हो इसमें सन्देह नहीं।

रेखाएँ यदि कुंचित, वक्र और विच्छिन्न हों तो वह व्यक्ति पापासक्त, प्रपञ्चक और दुष्ट बुद्धि होता है।

जिस ग्रह की अधिष्ठित रेखा के पास अतिरिक्त रेखा हो उस ग्रह की दशा के समय उसकी कारकता शक्ति में वैचित्र्य और परिवर्तन दिखाई पड़ता है।

बृहस्पति की रेखा प्रस्फुट और उज्ज्वल दिखाई पड़ने से यश और कीर्ति का भागी होता है।

पाप ग्रह की रेखा यदि कुञ्चित होकर प्रलम्बित हो तो मनुष्य के लिए कोई विशेष क्षति उत्पादक दुर्घटना उपस्थित होती है।

जिसके दोनों पैर स्नेह विशिष्ट, सुन्दर, उन्नत और ताम्रवर्ण नख से युक्त और उष्णीस चिन्हों द्वारा अंकित हों

वह स्त्री अखण्ड विभव शालिनी और पुण्यवती होती है।

पदतल में ताम्रवर्ण की रेखा होने से स्त्री सुलक्षण सम्पन्न, पुत्र और पौत्रवती होती है।

पैर के नाखून तांबे के समान, स्निग्ध, उन्नत, सुगोल तथा अच्छे दिखाई पड़ें और यदि ध्वजा, अंकुश आदि चिन्ह दिखाई पड़ें तो स्त्री महा सौभाग्यवती होती है।

जिस कामिनी के पदतल स्निग्ध, कोमल और पदतल मांसपूर्ण, समान, उष्ण और रक्तवर्ण हों वह स्त्री बहु भोग शालिनी और पति को सौभाग्य प्रदायिनी, होती है।

जिस मराल गामिनी कामिनी के चरण तल में उन्नीस पदार्थों में से कोई चिन्ह भी दिखाई पड़े, चलते समय पृथ्वी पर पैर स्पष्ट अंकित हों और बिना किसी आवाज़ के पैर रक्खे तो वह स्त्री निश्चय ही सर्व सुलक्षण युक्त होती है।

जिस स्त्री के चलने से धमक उठे, जो ज़ोर से चले, शब्द भयंकर और सूखा हो वह स्त्री विधवा होकर स्वतंत्र होती है।

अंगूठे के अतिरिक्त शेष अँगुलियों में कोई रेखा मिलने से स्त्री व्यभिचारिणी होती है।

चलते समय जिस स्त्री की कनिष्ठा अंगुली पृथ्वी को स्पर्श न करे वह थोड़े ही समय में पति का घात करके दूसरे को पति बना लेती है। ऐसी स्त्री का पुत्र मृत्यु को प्राप्त होता है।

जिस स्त्री का अँगूठा पृथ्वी को स्पर्श न करे वह पति विनाशिनी और स्वेच्छाचारिणी होती है।

चलते समय यदि अँगूठे के ऊपर तर्जनी पड़े तो वह स्त्री अवश्य ही कुलटा होती है।

चलते समय यदि पैरों से धूल उड़े तो वह स्त्री पिता माता और पति इन तीनों के कुल का नाश करने वाली होती है।

पदतल का मध्यस्थान खाली होने से स्त्री दरिद्रा, कोमल होने से दासी और मांस शून्य होने से भाग्य विहीना होती है।

पदतल खंडिताकार, असमान, कठोर, कर्कश, विवर्ण और सूपे के समान विशाल और शुष्क होने से नारी चिर दुखिनी और हतभागिनी होती है।

स्त्री जातिका अँगूठा सुगोल, मांस पूर्ण और अनुभाग उन्नत होने से सुलक्षणा और वक्र, छोटा और चिपटा से होने कुलक्षण होता है।

बृहस्पति की रेखा यदि शनि रेखा की अपेक्षा बड़ी हो तो बृहस्पति की प्रदेय वस्तु का अधिकार प्राप्त होता है।

यदि मङ्गल की रेखा सबसे बड़ी हो तो मनुष्य अस्त्र पराक्रमी और प्रतापी होता है।

बुध के अधिकृत स्थान में यदि दो या तीन समान और स्पष्ट सरल रेखाएँ दिखाई दें तो वह व्यक्ति सदाशय, विचक्षण चेता, सुवक्ता, कवि और ज्ञानी होता है। रेखाएँ यदि तीन से अधिक हों तो इसके विपरीत फल होता है।

जिस स्त्री के कपाल में बुध के स्थल में यदि तीन से अधिक रेखाएँ दिखाई पड़ें तो वह नारी मुखरा, चञ्चलता,

असनी और डाकिनी होगी ।

यदि नासिका मूल के पास दो या तीन रेखाएँ मध्य में विच्छिन्न होकर वर्तमान हों तो वह व्यक्ति लम्पट होता है।

सूर्य की रेखा यदि अविच्छिन्न, अपनिहत; सरल और सम भाव से स्पष्ट दिखाई पड़े तो मनुष्य विपुल धन, प्रचुर सम्मान और राजानुग्रह प्राप्त करके महा सौभाग्यवान होता है ।

यदि इसी तरह चन्द्र रेखा होतो भ्रमण और वाणिज्य प्रदर्शित होता है ।

कपाल चौड़ा होने से व्यक्ति अध्यापक होता है। कपाल पर अधिक बाल होने से व्यक्ति पापात्मा होता है। यदि कपाल में स्वस्तिक चिन्ह हो तो व्यक्ति महाधनवान होता है ।

जिसका कपाल अर्द्ध चन्द्राकार, अनुच्च और देखने में सुन्दर हो वह व्यक्ति मङ्गलास्पद और धन सम्पन्न होता है।

उन्नत और प्रशस्त ललाट सौभाग्य का चिन्ह है। असमान कपाल दुर्भाग्य का परिचायक और अर्द्ध चन्द्र चिन्ह मनुष्य को महा सौभाग्य प्रदान करता है ।

जिस मनुष्य के कपाल में वज्र, त्रिशूल और धनुष का चिन्ह दिखाई दे वह व्यक्ति संसार में पूज्यनीय, दिव्याङ्गना प्रिय, दीर्घायु और सर्व सुखी होता है।

जिसके कपाल में तीन रेखाएँ दिखाई पड़ती हैं वह व्यक्ति सुख सम्पन्न, पुत्रवान और साठ वर्ष की आयु का होता है ।

कपाल में स्पष्ट और अस्पष्ट अनेक रेखाएँ होने से मनुष्य अल्पायु होता है। जिसकी सभी रेखाएँ छिन्न भिन्न होती हैं उसकी अपमृत्यु होती है।

जिसके कपाल में त्रिशूल दिखाई पड़े वह व्यक्ति धनवान, बहु सन्तान युक्त और दीर्घायु होता है।

कपाल की रेखाएं प्रथक प्रथक अंकित होने से वह व्यक्ति लम्पट और स्त्री व्यभिचारिणी होती है।

यदि स्त्री का कपाल शिरों शून्य, रोम विहीन, अर्द्ध-चन्द्राकार, अभिन्न और तीन अंगुली चौड़ा हो स्त्री रोग शून्य, और सौभाग्यवती होती है। यदि इस प्रकार के कपाल में स्वस्तिक चिन्ह हो तो वह स्त्री अवश्य ही राज्याधिकारिणी अथवा उसी के समान महा विभवशालिनी होती है।

जिस स्त्री के कपाल में दीर्घ रेखा दिखाई दे वह देवर घातिनी होती है।

जिस स्त्री के कपाल में त्रिशूल दिखाई पड़े वह स्त्री हज़ारों स्त्रियों के ऊपर अपना प्रभुत्व स्थापित करती है।

कपाल में यदि चार रेखाएँ समान और सरल दिखाई पड़े तो मनुष्य दीर्घ जीवी विद्वान, सुखी और सम्पत्तिवान होता है।

जिस स्त्री के कपाल श्रीवत्स और स्वस्तिक चिन्ह युक्त एक रेखा होकर अत्यन्त सुलक्षण होती है।

जिस स्त्री के कपाल में त्रिशूल का चिन्ह कृष्ण अथवा पिङ्गल वर्णका दिखाई पड़े वह स्त्री पाँच पुत्रोंकी माता तथा

धन धान्य वृद्धि करने वाली होती है।

यदि कपाल तांबे के रंग का और उन्नत हो तो वह व्यक्ति पागल होकर रास्तों पर मारा मारा फिरता है।

कपाल के अधिष्ठित सप्त ग्रह मानव के कण्ठ स्वर में विभक्त होते हैं। मनुष्य के जन्म के समय किस ग्रह का आधिपत्य था और उसका शुभाशुभ किस प्रकार है वह इसके द्वारा बिना कठिनाई के निश्चित हो जाता है। ग्रहों के आधिपत्य से मनुष्य के कंठ स्वर में इस प्रकार का भेद होता है:—

शनि—अविशुद्ध, धीर, गम्भीर और कर्कश।
बृहस्पति—सुन्दर, सतेज, सहास्ययुक्त, मनोज्ञ और परिमित।
सूर्य—शान्त, शुद्ध, मधुर और वीणाध्वनि के समान।
बुध—सरल, हृदयवान, अनुच्च और द्रुत।
मङ्गल—तीव्र, कर्कश, उच्च, अशान्त और क्रोधी।
चन्द्र—निम्न और असमान।
शुक्र—मधुर, कोमल और स्त्री के कंठ समान।

हमारी छपाई पुस्तकों और चित्रों की सूची ।

सब प्रकार का नवीन और प्राचीन जैन ग्रन्थों और चित्रों के प्रकाशक तथा विक्रेता—

जैन-साहित्य-मन्दिर,

सागर [म. प्र.]

Hindi Mandir Priss Jubbulpore.